शान्ति-सन्देश

अगस्त, २०११ ई०

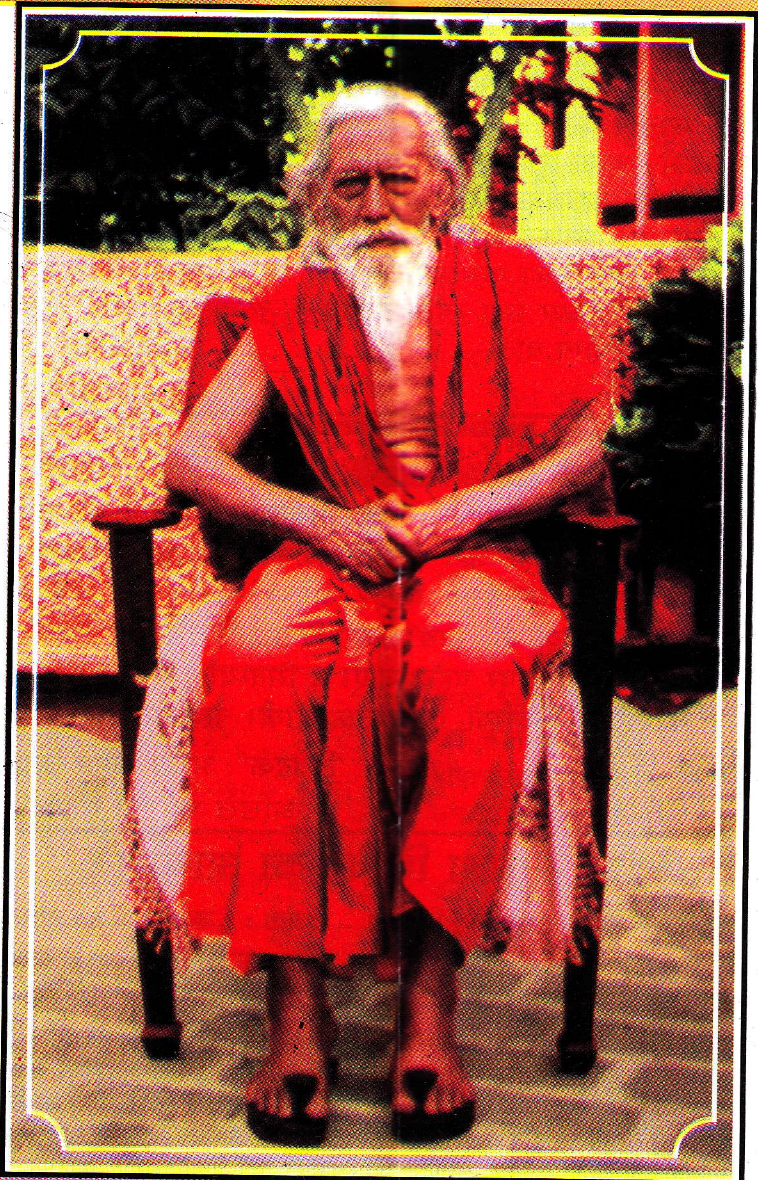

संत सद्‌गुरु महर्षि मेँहीँ परमहंसजी महाराज

महर्षि मेँहीँ आश्रम, कुप्पाघाट, भागलपुर
बिहार (भारत)

विषय-सूची

क्रम	विषय	पृष्ठ
१.	सूक्ति-कण	१
२.	संतवाणी–संत नामदेवजी महाराज की वाणी	२
३.	सत्संग-सुधा–परमाराध्य संत सद्‌गुरु महर्षि मेँहीँ परमहंसजी महाराज	३
४.	प्रवचन-पीयूष–पूज्यपाद महर्षि संतसेवी परमहंसजी महाराज	६
५.	गुरु-वचन–पूज्यपाद महर्षि हरिनन्दन परमहंसजी महाराज	१०
६.	शान्ति स्वरूप सर्वेश्वर जानो–पंडित विष्णुकांतजी महाराज	१५
७.	तीन चेतावनियाँ : भगवान बुद्ध	१६
८.	प्रार्थना से अनेक लाभ–स्वामी शुकदेवानंद सरस्वती	१६
९.	इस जड़ जगत में भी एक महाचैतन्य लोक ओत-प्रोत है	१७
१०.	मन रे, गुमान क्यों करना–महाराज श्रीचरण सिंहजी	१८
११.	साकार और निराकार–श्रीरामकृष्ण परमहंस	२०
१२.	काम करनेवाले के सामने अवसर सदा उपस्थित रहते हैं–स्वामी रामतीर्थ	२१
१३.	सम्पादकीय : विचार करनेयोग्य बातें	२२
१४.	स्वास्थ्य समाचार	२४

आवश्यक-सूचना

बिहार सहित अन्य प्रांतों के सभी जिलों के अध्यक्ष एवं मंत्रियों को सूचित किया जाता है कि वे आगामी २०१२ ई० में जहाँ-जहाँ जिलाधिवेशन कराने की स्वीकृति प्रदान किये हैं, उसके लिए आवेदन-पत्र महासभा कार्यालय में ३१ अगस्त, २०११ ई० तक अनिवार्य रूप से जमा कर दें तथा वहाँ के सत्संगियों को साथ लेकर दिनांक ३ सितम्बर, २०११ के शाम तक महर्षि मेँहीँ आश्रम, कुप्पाघाट, भागलपुर पहुँच जाएँ। ४ सितम्बर (रविवार), २०११ को ९ बजे दिन में जिलाधिवेशन की तिथि-निर्धारण हेतु बैठक होगी। इस बैठक में महासभा के सभी पदाधिकारी भी उपस्थित रहेंगे।

निवेदक : अरुण कुमार अग्रवाल (महामंत्री)
अखिल भारतीय संतमत-सत्संग महासभा

मासध्यान साधना शिविर का आयोजन

स्थान : महर्षि मेँहीँ आश्रम, कुप्पाघाट, भागलपुर-३ (बिहार) **दिनांक : १ नवम्बर से ३० नवम्बर, २०११ ई० तक**

साधक संख्या : १२५ **व्यवस्था शुल्क :** ७५१ रुपये मात्र

माघ भूखा बाघ काल के, मुख पड़ो है बाबरे । होश कर चेतो सबेरे, बचो ध्यान के दाव रे ॥

आप सभी धर्मप्रेमियों को यह जानकर अपार हर्ष होगा कि गंगातट स्थित सिद्धपीठ महर्षि मेँहीँ आश्रम, कुप्पाघाट, भागलपुर में संतमत के वर्तमान आचार्य पूज्यपाद **महर्षि श्रीहरिनन्दन परमहंसजी महाराज** के सान्निध्य में मासध्यान साधना का आयोजन होगा। जो साधक प्रतिदिन पाँच बार एक-एक घंटा ध्यानाभ्यास के लिए बैठने में अभ्यस्त हों, कृपया वे ही इस आयोजन में सम्मिलित होने के लिए **१५ अक्टूबर** तक आवेदन-पत्र के साथ, व्यवस्था शुल्क निम्न पते पर भेज सकते हैं। संख्या पूरी हो जाने पर आवेदन-पत्र स्वीकार नहीं किए जाएँगे। कुछ कारणवश माताओं एवं बहनों को इस कार्यक्रम में शामिल करने में हम सक्षम नहीं हैं। साधकगण अपने दैनिक व्यवहार के सभी सामानों के साथ ३१ अक्टूबर को पहुँच जाएँ।

पत्राचार का पता : स्वामी निर्मलानन्द (व्यवस्थापक)
महर्षि मेँहीँ आश्रम, कुप्पाघाट, भागलपुर-३ (बिहार)

निवेदक :
दीनानाथ भगत उर्फ भिखारी भगत (व्यवस्थापक)
महर्षि मेँहीँ आश्रम, कुप्पाघाट, भागलपुर-३

शान्ति-सन्देश

अखिल भारतीय संतमत-सत्संग का प्रमुख मासिक पत्र

वर्ष ६१ अंक ५

आषाढ़-श्रावण, २०६८ वि० सं०

अगस्त, २०११ ई०

संस्थापक

महर्षि मेँहीँ परमहंसजी महाराज

सम्पादक एवं प्रकाशक

प्रो० डॉ० गुरु प्रसाद (मंत्री)

प्रेस प्रबंधक

स्वामी स्वरूपानन्द

सहयोग राशि : एक प्रति ६ रुपये
वार्षिक ६० रुपये
पंद्रहवर्षीय ७०० रुपये
विदेश के लिए : वार्षिक १० डॉलर
पंद्रहवर्षीय १०० डॉलर

सहयोग राशि भेजने का पता

प्रबंधक, शान्ति-सन्देश
महर्षि मेँहीँ आश्रम, कुप्पाघाट,
भागलपुर, बिहार (भारत)
पिन–८१२००३
☎ -०६४१-२४२७४९८

ड्राफ्ट इस नाम से बनवाएँ–
'Shanti Sandesh' Patrika
('शान्ति-सन्देश' पत्रिका)

सूक्ति-कण

✪ द्वे बीजे चित्तवृक्षस्य प्राणस्पन्दनवासने।
एकस्मिंश्च तयोः क्षीणे क्षिप्रं द्वे अपि नश्यतः ।।

चित्त-रूप वृक्ष के दो बीज हैं–प्राणस्पन्दन और वासना। इन दोनों में से एक के क्षीण हो जाने से दोनों ही नाश को प्राप्त होते हैं॥ (मुक्तिकोपनिषद्)

✪ चित्तमन्तर्गतं दुष्टं तीर्थस्नानैर्न शुद्धयति।
शतशोऽपि जलैर्धौतं सुराभाण्डमिवाशुचि ।।

भीतर में रहनेवाला दूषित चित्त तीर्थस्नान से शुद्ध नहीं होता, जिस प्रकार सैकड़ों बार जल से धोने पर भी मदिरा का पात्र शुद्ध नहीं हो सकता।

✪ तीर्थे दाने जपे यज्ञे काष्ठे पाषाणके सदा।
शिवं पश्यति मूढात्मा शिवे देहे प्रतिष्ठिते ।।

वह शिव तो शरीर में विद्यमान है, पर मूर्ख लोग तीर्थ में, दान में, जप में, यज्ञ में, काष्ठ में और पाषाण में शिव देखते हैं।

✪ ज्ञानशौचं परित्यज्य बाह्ये यो रमते नरः।
स मूढः कांचनं त्यक्त्वा लोष्टं गृह्णाति सुव्रत ।।

ज्ञान-शौच को छोड़कर जो बाहरी शौच में लगा रहता है, वह मूढ़ सोने को छोड़कर मिट्टी का ढेला लेता है। (जाबालदर्शनोपनिषद्)

✪ पाषाणलोहमणिमृण्मयविग्रहेषु पूजा पुनर्जनन भोगकरी मुमुक्षोः।
तस्माद्यतिः स्वहृदयार्चनमेव कुर्याद्बाह्यार्चनं परिहरेदपुनर्भवाय।।

पत्थर, लोहा, मणि और मिट्टी की मूर्ति की पूजा करने से मोक्षार्थी को पुनः भोग-जन्म आदि प्राप्त होते हैं, अतः यति को चाहिए कि अपने हृदय का पूजन करे (अर्थात् अपने अन्तर में ही पूजन करे; सारांश अन्तर्मार्गी बने)। पुनर्जन्म आदि के लिए बाहरी पूजन न करे।

✪ कर्मत्यागान्न संन्यासो न प्रेषोच्चारणेन तु।
संधौ जीवात्मनोरैक्यं संन्यासः परिकीर्तितः ।।

कर्म का त्याग संन्यास (त्याग) नहीं कहलाता है और न संन्यास के दीक्षा-मंत्र के उच्चारण से ही (त्याग होता है)। संध्याओं में जीव (आत्मा) और (परम) आत्मा की एकता होनी असली संन्यास कहलाता है। (मैत्रेय्युपनिषद्)

संतवाणी

संत नामदेवजी महाराज की वाणी

एक अनेक बिआपक पूरन जत देखउ तत सोई।
माइआ चित्र विचित्र विमोहित बिरला बूझै कोई ॥१॥
सभु गोविंदु है सभु गोविंदु है गोविन्दु बिनु नहिं कोई।
सूतु एकु मणि सत सहँस जैसे ओतिपोति प्रभु सोई ॥२॥
जल तरंग अरु फेन बुदबुदा जल ते भिन्न न कोई।
इहु परपंचु पारब्रह्म की लीला विचरत आन न होई ॥३॥
मिथिआ भरमु अरु सुपनु मनोरथ सति पदारथु जानिआ।
मुक्ति मनसा गुरु उपदेसी जागत ही मनु मानिआ ॥४॥
कहत नामदेउ हरि की रचना देखहु रिदै विचारी।
घट घट अंतरि सरब निरंतरि केवल एक मुरारी ॥५॥

भावार्थ—मूल रूप में परब्रह्म एक-ही-एक है। वही सृष्टि के रूप में अनेक हो गया है। वह अत्यंत सघनता से एकरस सर्वत्र व्यापक है और अपने आपमें सर्वथा पूर्ण है। जिधर देखो, उधर वह-ही-वह है। माया का रूप अद्भुत और मोहित करनेवाला है। बिरला ही कोई उस माया को समझ पाता है॥१॥ सब कुछ परमात्मा का ही रूप है। परमात्मा के अतिरिक्त और किसी की सत्ता नहीं है। जैसे सैकड़ों-हजारों मनकों में एक ही धागा पिरोया हुआ हो, उसी प्रकार सृष्टि के समस्त पदार्थों में वही एक परमात्मा ओत-प्रोत है॥२॥ जैसे जल की लहर और फेन या बुलबुले में से कोई जल से भिन्न नहीं होता, उसी प्रकार सृष्टि तत्त्वतः परमात्मा से भिन्न नहीं है। यह समस्त सृष्टि परब्रह्म की लीला (खेल) है; विचार करने पर यह परमात्मा से भिन्न कोई दूसरी सत्ता सिद्ध नहीं होती॥३॥ यह सृष्टि मिथ्या, भ्रम में डालनेवाली और स्वप्नवत् नाशवान है; फिर भी कल्पना से यह सत्य वस्तु-सी भासती है। इच्छाओं से मुक्त होने के लिए गुरु उपदेश करते हैं। जागने पर (तुरीयावस्था में आने पर अथवा आत्मज्ञान होने पर) मन मान जाता है (वशीभूत हो जाता है) ॥४॥ संत नामदेवजी महाराज कहते हैं कि हृदय में विचार करके (ध्यान करके) परमेश्वर की रचना को देखोगे, तो पाओगे कि एक-ही-एक परमात्मा प्रत्येक शरीर में और सर्वत्र बिना अवकाश छोड़े व्यापक है॥५॥

□□□

परमाराध्य सन्त सद्गुरु महर्षि मेँहीँ परमहंसजी महाराज

प्रातःस्मरणीय अनन्त श्रीविभूषित पूज्यपाद संत सद्गुरु महर्षि मेँहीँ परमहंसजी महाराज का यह प्रवचन अररिया जिलान्तर्गत श्रीसंतमत-सत्संग मन्दिर, भटगामा में दिनांक ०६.०५.१९६६ ई० के अपराह्नकालीन सत्संग में हुआ था। —श्रुतलेखक : पूज्यपाद महर्षि संतसेवी परमहंस

बन्दउँ गुरु पद-कंज, कृपासिन्धु नररूप हरि।
महामोह तमपुंज, जासु बचन रबिकर निकर।।

प्यारे लोगो!

आपलोगों को दो बातों के विषय में कहूँगा। एक तो राम और ईश्वर, दूसरी बात विज्ञान। 'राम' कहने से सब लोग साधारण तरह से जानते हैं कि जैसे हमलोग रामनवमी के दिन जहाँ-तहाँ उत्सव देखते हैं। गाँव में प्रतिमा बनती है। सब गाँवों में नहीं; लेकिन बहुत-से गाँवों में राम की प्रतिमा बनती है। लोग ठाकुरबाड़ी जाते हैं, वहाँ दर्शन करते हैं। दर्शन करके जानते हैं कि श्रीराम शरीरधारी विशेष पुरुष थे, जैसा कि प्रतिमा में, चित्र में और ठाकुरबाड़ी में है। मृतिका की प्रतिमा में जैसा रूप है अथवा जो पहले से ही स्थापित प्रतिमा है, उसका दर्शन करके समझते हैं कि इसी तरह के राम थे। 'राम' कहने से प्रतिमा का रूप, राम का ख्याल आता है। जैसा देखते हैं, वैसा ही ख्याल में आवे, यह प्रचलित—स्वाभाविक बात है। यह गलती में जानते हैं, ऐसी बात नहीं।

जो पढ़े-लिखे अधिक हैं, वे केवल रूपधारी राम ही नहीं समझते और भी समझते हैं। जैसे श्रीराम जब जंगल गए थे, तो वे वाल्मीकि के आश्रम में गए, वहाँ वार्ता हुई। वहाँ रूपवाले राम वाल्मीकि के सामने थे ही; लेकिन वाल्मीकिजी कहते हैं—

राम स्वरूप तुम्हार, वचन अगोचर बुद्धि पर।
अविगत अकथ अपार, नेति नेति नित निगम कह।।

एक तो रूपधारी राम है, जो वचन में आते हैं और जिनके हाथ, पैर, मुँह, आँख, नाक, कान आदि इन्द्रियाँ हैं। जो इन्द्रियज्ञान में आवे, उसको गोचर पदार्थ कहते हैं। रूपधारी राम का चरण छुआ जाता है। वे साँवले हैं। उनकी सुन्दरता को देखते हैं, बुद्धि ग्रहण करती है। ऐसा रूप 'वचन अगोचर बुद्धि पर' नहीं कहा जाएगा। 'अविगत' का अर्थ है—जो कहीं से हीन नहीं, सर्वव्यापी हैं। हैं तो राम सामने ही; लेकिन कहते हैं कि सर्वव्यापी हैं, अलख हैं। धनुषधारी राम देखने में आते हैं और कहते हैं—'अलख'। नख से शिखा तक देखते हैं; लेकिन कहते हैं 'अपार'। एक तो रूप और दूसरा स्वरूप होता है। एक तो शरीर का रूप होता है और दूसरा

आत्मा का स्वरूप कहलाता है।

श्रीरामजी के शरीर को देखकर भी वाल्मीकिजी स्वरूप के लिए कहते हैं–इन्द्रियज्ञान में नहीं, बुद्धि से परे है, सर्वव्यापी है। देखने में आने योग्य नहीं। अपार है, वेद उसको नेति-नेति कहते हैं। राम का शरीर-रूप और राम का स्वरूप दोनों समझिए, तो दोनों राम हैं। राम के दोनों रूपों का दर्शन और पहचान अच्छा है। देहरूप का दर्शन हो और आत्मस्वरूप का नहीं, तो काम बाकी रहेगा।

भगवान राम आज नहीं हैं। उनकी प्रतिमा है; लेकिन सभी प्रतिमाएँ एक-सी नहीं हैं। उनमें कौन-कौन-सी प्रतिमा ठीक हैं, कहा नहीं जा सकता। ग्रन्थ में जैसे रंग-रूप का वर्णन किया गया है, उसी के अनुकूल सभी चित्रकार बनाते हैं। जिस चित्रकार में जितनी प्रवीणता है, वे उतने अच्छे बनाते हैं। इसीलिए कम जाननेवाले चित्रकार के बनाए रूप में अन्तर पड़ जाता है; लेकिन जो स्वरूप है, उसकी प्रतिमा नहीं बन सकती।

शरीर-रूप राम को सगुण राम और जो अलख, अपार है, वह निर्गुण राम है। राम के सगुण और निर्गुण–दोनों रूपों का ज्ञान होना चाहिए। सगुण का ज्ञान इन्द्रियों से होता है और निर्गुण का ज्ञान चेतन आत्मा से होता है। बुद्धि से परे चेतन आत्मा है। चेतन आत्मा से जो जाना जाता है, वही अविगत, अलख, अपार राम है। शरीर प्रकट होता और गुप्त भी होता है। स्वरूप के होने का कारण नहीं होता; किंतु शरीर के होने का कारण होता है। स्वरूप का होना किसी सबब (वजह) से नहीं होता। वह परम प्राचीन है, परम सनातन है। ऐसा जो पदार्थ है, वही अविगत, अलख, अपार है।

समय-समय जो भगवान का अवतार होता है, उसमें कारण होता है। राम के अवतार के कई कारण हैं। सब अवतारों के कई कारण हैं। सब अवतारों में एक ही रंग-रूप नहीं, विविध रंग-रूप। राम-रूप में, श्याम-रूप में बड़ा सुन्दर और नृसिंह रूप बड़ा भयंकर। वामन अवतार में बहुत छोटा रूप, केवल बावन अंगुली का।

असल में परमात्मा का ज्ञान अकथ, अपार के दर्शन से होता है। यह दर्शन शरीर में रहने से नहीं होता। शरीर से पृथक होकर शरीर में रहो, तब अपने में अपने से दर्शन होगा। ऐसा होने से तमाम दर्शन पाओगे। आँख से नहीं देखोगे, अपने से देखोगे। तुम स्वयं शरीर नहीं हो। गाँव में कभी-न-कभी कोई अवश्य मरता है और उसकी श्राद्ध-क्रिया होती है। सभी धर्मों में श्राद्ध-क्रिया होती है, किसी-न-किसी रूप में। इसमें विश्वास रहता है कि शरीर छूट गया है, चेतन आत्मा कहीं चली गई है। उसकी शुभ गति हो, इसलिए श्राद्ध-क्रिया होती है।

शरीर से केवल चेतन आत्मा नहीं निकलती। इस स्थूल शरीर से सूक्ष्म, कारण, महाकारण के सहित चेतन आत्मा निकल जाती है। ये तीन शरीर मरते नहीं। अपने स्वयं कोई शरीर नहीं है, शरीर निवासी है। जैसे दूध को मथते-मथते आखिर में उससे मक्खन अलग हो जाता है और उसी में रहता है। फिर आप अलग करते हैं। इसी तरह चेतन आत्मा शरीर में रहे और शरीर से फूटकर रहे, तब पहचान में आवेगा कि यही मैं हूँ और यही राम है, जो **'अविगत अलख अपार'** है। सगुण राम के दर्शन से माया में बहुत बढ़ती होती है और निर्गुण राम के दर्शन से मोक्ष होता है। निर्गुण राम अलग और सगुण राम अलग नहीं रहता। शरीर को पहन लिया, तो सगुण है। सब शरीरों को छोड़ दिया, वह निर्गुण है। जो भजन करता है, वह शरीर से वैसे निकलकर रहता है, जैसे दूध से मक्खन। वही जीवन्मुक्त होता है, वही अपने को पहचानता है और राम के स्वरूप को भी।

आज लोग विज्ञान की ओर बहुत झुके हैं। इसमें बड़ी इज्जत होती है, बहुत पैसे भी

मिलते हैं। अभी सुना कि 'बिनु विज्ञान कि समता आवै।' समता=एकीभाव। आज तो भौतिक विज्ञान बढ़ा है, उसने क्या किया है? एक भाव को मिलाया नहीं, टुकड़ा किया है। जितना भौतिक विज्ञान बढ़ा है, उतना ही नाशकारी बना है। यह है भौतिक विज्ञान, एक क्षण में क्या-से-क्या नाश कर दे। संसार के पदार्थों को विशेष रूप से जानना भौतिक विज्ञान है। भौतिक विज्ञान में समता नहीं आई है और न आ सकती है। भौतिक विज्ञान की बढ़ती हुई है; लेकिन अन्त नहीं हुआ है। सब-के-सब जिस मूल पदार्थ पर अवलम्बित हैं, वे राम हैं, परमात्मा हैं, वे अध्यात्म-विज्ञान हैं। इसके लिए स्कूल-कॉलेज जाने की जरूरत नहीं है। अपने अन्दर अभ्यास करने की जरूरत है। भौतिक विज्ञान में समता आएगी, इसका विश्वास नहीं किया जा सकता है। आजतक जितनी कोशिशें हुई हैं, उनमें थोड़ी-थोड़ी सफलता मिलती जाती है। भौतिक विज्ञान में मारने और नाश करने की बात तो बहुत आयी है; लेकिन बचाने की नहीं।

ईश्वर का दर्शन ही अध्यात्म-विज्ञान का मूल है। इसमें समता होती है। विश्वामित्र बड़े बली राजा थे। अस्त्र-शस्त्र के बहुत ज्ञाता थे। पीछे वे श्रीराम के गुरु हुए और थोड़े ही काल में उनको सिखा दिया। विश्वामित्र ने वशिष्ठजी को अस्त्र-शस्त्र के प्रभाव से दबाना चाहा; लेकिन दबा न सके। अन्त में उन्होंने तप किया। तप में कुछ गिरे भी। फिर सँभले और इतना तप किया कि उनमें इतना बल हो गया कि जो कुछ किसी को कहे, सो हो जाय। उनके शाप के डर से सभी लोग थर-थर काँपते थे। वे लोगों से कहते थे कि लोग मुझे ब्राह्मण कहें। लोग कहते थे कि वशिष्ठजी आपको ब्राह्मण कह दें, तो हमलोग भी कहेंगे; लेकिन वशिष्ठजी उनको ब्राह्मण नहीं कहते थे। विश्वामित्रजी ने वशिष्ठजी के सौ पुत्रों को मरवा दिया, फिर भी वशिष्ठजी के हृदय में रंचमात्र भी क्लेश नहीं हुआ। एक बार जब वशिष्ठजी भोजन करने लगे, तो साक में नमक नहीं था। उन्होंने अपनी पत्नी अरुन्धती से पूछा कि साग में नमक नहीं है, क्यों? अरुन्धती ने कहा कि नमक समाप्त हो चुका है, इसलिए साग में नमक नहीं दिया गया। वशिष्ठजी ने कहा कि निकट ही में विश्वामित्रजी का आश्रम है, उनके यहाँ से नमक क्यों नहीं ले आयी? अरुन्धतीजी ने कहा कि जो मेरे सौ पुत्रों को मार चुके हैं, उनसे मैं नमक माँगती? वशिष्ठजी ने कहा–'अरी! उनकी आत्मा और मेरी आत्मा एक है।'

विश्वामित्र ने बहुत द्वेष किया; लेकिन वशिष्ठजी ने कुछ नहीं किया। यह अध्यात्म की समता है। यह आन्तरिक समता है। वैसे ज्ञान कहनेवाले बहुत हैं। अध्यात्म-ज्ञान जानने के लिए योग-शास्त्र है। उसको सीखने के लिए बाहर में कोई घर नहीं है, अपना शरीर है। इसका यत्न संत सद्‌गुरु बताते हैं। करनेवाले समता पाते हैं। ❖

भगवत्प्राप्ति कब होगी?

एक वृद्ध ने ईसामसीह से एक दिन पूछा–'भगवत्प्राप्ति कैसे होगी?' ईसामसीह ने वृद्ध के प्रश्न का कोई उत्तर नहीं दिया। वे उसे नजदीक के एक तालाब में ले गये और जल में डुबा रखा। कुछ क्षणों में ही वृद्ध कष्ट के मारे छटपटाने लगा। तब ईसामसीह ने उसे पानी से बाहर निकालकर पूछा–'पानी में तुम्हें कैसा मालूम होता था?' वृद्ध ने जवाब दिया–'ऐसा लगता था कि श्वास बंद होने के कारण प्राण उड़ जाते।' ईसामसीह ने तब कहा–'भगवत्प्राप्ति के लिए जब मन की ऐसी अवस्था होगी, तभी उनके दर्शन होंगे।

–स्वामी ब्रह्मानन्द

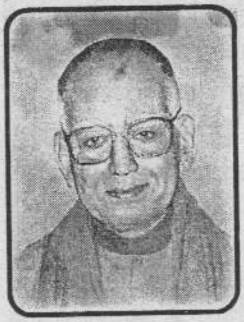

पूज्यपाद महर्षि संतसेवी परमहंसजी महाराज

प्रवचन-पीयूष

पूज्यपाद महर्षि संतसेवी परमहंसजी महाराज का यह प्रवचन महर्षि मेँहीँ आश्रम, कुप्पाघाट, भागलपुर (बिहार) में दिनांक २४.०७.१९९४ ई० को साप्ताहिक सत्संग के सुअवसर पर हुआ था।
प्रेषक : सम्पादक

मंगल मूरति सतगुरु, मिलवैं सर्वाधार। मंगलमय मंगलकरण, विनवौं बारम्बार।।
धन्य धन्य सद्गुरु सुखद, महिमा कही न जाय। जो कुछ कहूँ तुम्हरी कृपा, मोतें कछु न बसाय।।

आदरणीय सज्जनवृन्द तथा आदरणीया माताओ एवं बहनो!

संतों का ज्ञान महान् है। जो उसका आचरण करते हैं, उनका होता कल्याण है। संतों का ज्ञान केवल मौखिक या बौद्धिक नहीं, उनका अनुभव ज्ञान होता है। अपने को तपाकर, बहुत प्रकार के कष्टों को सहकर, साधना की पराकाष्ठा पर पहुँचकर उन्होंने जो उपलब्ध किया, वही अपने अनुभव की बात संसार के सामने रखी है। संत कोई वेश-विशेष के कारण नहीं होते। संतों की पहचान भी बहुत कठिन होती है। संत तुलसी साहब कहते हैं–

जो कोइ कहै साधु को चीन्हा।
तुलसी हाथ कान पर दीन्हा।।

जिस समय संत लोग होते हैं, उस समय उनकी पहचान कोई बिरले ही कर पाते हैं। अधिक तो उनके विरोधी ही होते हैं। उनकी निन्दा, उनकी शिकायत सामान्य लोगों के लिए एक मामूली-सी बात होती है। वे निन्दा-शिकायत ही नहीं करते, उनकी जान लेने तक को उतारू होते हैं। इतना ही नहीं, संतों-महात्माओं के प्राण लेने से भी वे बाज नहीं आये। सत्य तो यह है कि संतों ने हँसते-हँसते अपने प्राण दिये; किन्तु विश्व-कल्याण के लिए आत्मज्ञान देना उन्होंने नहीं छोड़ा। संतों ने अपने प्राण-प्रयाण की परवाह नहीं करके सत्य ज्ञान का प्रचार करते हुए अपनी कुर्बानी की; किन्तु कभी धर्म को नहीं छोड़ा। प्रभु ईसा मसीह जिस समय हुए थे, बहुत कम लोगों का विश्वास उनपर था; बल्कि प्रभु ईसा मसीह के शिष्य ने ही उनको पकड़वाया और क्रॉस पर लटकवाया। दूसरे की तो बात जाने दीजिए, शिष्य का गुरु के साथ यह कैसा व्यवहार है। महान आश्चर्य है; लेकिन उन संत का हृदय कितना महान था। उनका आत्मबल कितना बढ़ा-चढ़ा था! उनका हृदय कितना विशाल था! क्रॉस पर लटकते हुए उन्होंने कहा था– 'हे प्रभु! जो मेरे साथ इस तरह का व्यवहार कर रहे हैं, उनको क्षमा करना; क्योंकि वे नहीं जानते हैं कि वे क्या कर रहे हैं। वे अज्ञानी हैं।' आज उसी प्रभु ईसा मसीह के नाम पर ईसाई धर्म फैला हुआ है और विश्व में ईसाइयों की संख्या ही संभवतः सभी धर्मों के लोगों से अधिक है। उस समय उनको किसने पहचाना? अगर वे अधिक दिनों तक रहे होते, तो उनसे जो हम लाभ लिये होते, उनके अभाव में क्या ले सकते हैं? आज क्या मिल सकता है? केवल उनकी वाणी मिल सकती है। क्या वाणी से ही हम तत्त्वज्ञान को समझ सकते हैं। ऑक्सीजन और हाइड्रोजन–इन दो वाष्पों को मिलाने से पानी बनता है। किताब में लिखा

हुआ है कि ऑक्सीजन की इतनी मात्रा लीजिए और हाइड्रोजन की इतनी मात्रा लीजिये; मिलाइये, पानी हो जाएगा। पुस्तक में सारी बातें लिखी हुई हैं; किन्तु अरे भाई! ऑक्सीजन किसको कहते हैं और हाइड्रोजन किसको कहते हैं? उनकी पहचान करानेवाला कोई व्यक्ति विशेष तो होना चाहिए ही। प्रयोगशाला में जाना पड़ेगा। जिसने इन दोनों गैसों को मिलाकर पानी बनाकर देख लिया है, वही आपको पानी बनाकर दिखलाएगा। नहीं तो दूसरी चीज से दूसरी चीज मिलकर तीसरी चीज बन जाएगी और वह खतरनाक सिद्ध होगी। केवल किताबी ज्ञान से नहीं होता है। जो ज्ञानी अपने जीवन-काल में रहते हैं, उनका जो ज्ञान होता है, वह उनके अनुभव का ज्ञान होता है।

इस्लाम धर्म के प्रवर्त्तक हजरत मुहम्मद साहब थे। इनके साथ भी लोगों ने दुर्व्यवहार किया था। और को तो जाने दीजिए, इनके ही दो चाचा थे। उन चाचाओं ने इस्लाम धर्म को स्वीकार किया नहीं। एक चाचा ने तो कोई बाधा नहीं दी; लेकिन दूसरे ने बड़ी बाधा उत्पन्न कर दी थी। अपने जीवनकाल में इनको अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। आज हजरत मुहम्मद साहब के नाम पर देखिये, इस्लाम धर्म फैला हुआ है। जिस समय वे थे, उस समय कितने लोगों ने उनको पहचाना?

स्वामी दयानंदजी जिस समय थे, उनके सेवक ने ही उनके साथ धोखेबाजी करके उनकी जान ले ली। दूध पिलाने के बहाने संसार से रवाना कर दिया। सज्जनो! विचारणीय विषय है कि जो साथ में रहता है, वह भी संत को नहीं पहचान सकता। उसको दृष्टि नहीं है, आँखें नहीं हैं, सूझेगा क्या? कितना भी सूर्य का प्रकाश क्यों न हो, उल्लू को कभी सूझता है दिन में? एक सूर्य के बदले हजार सूर्य उग जाएँ; लेकिन उल्लू को कभी आँख होने को नहीं, सूझने को नहीं। उसी तरह जो संत हैं, ज्ञानी हैं, उनको अज्ञानी जन क्या जाने!

भगवान बुद्ध के मौसेरे भाई थे देवदत्त, जो भगवान के शिष्य भी थे। भगवान बुद्ध के साथ कितना दुर्व्यवहार और अत्याचार किया, क्या कहा जाए! भगवान को अन्य विरोधियों ने भी कम नहीं सताया। एक कुलटा नारी को बहकाकर भगवान बुद्ध के ऊपर चरित्रहीनता का दोषारोपण कर दिया; किन्तु जो सत्य था, सबके सामने प्रत्यक्ष हो गया और भगवान बुद्ध दोपहर के मार्तण्ड की भाँति उद्भासित हो उठे। भगवान बुद्ध को मरवा डालने के लिए देवदत्त ने कम कुचेष्टा नहीं की; किन्तु सबमें वह विफल रहा। परमात्मा ने जिसको जितने दिनों का जीवन दिया है, उनके अन्दर उसको कौन मार सकता है।

जाको राखै साइयाँ, मार सकै ना कोय।
बाल न बाँका करि सकै, जो जग बैरी होय ।।

मीराबाई भक्तिन हुईं। उनके परिवारवालों ने ही उनको कुलटा कहकर अपमानित किया। अपमानित ही नहीं किया, उन्होंने तो चाहा कि ऐसी कुलटा नारी मर ही जाए तो अच्छा है। सोचा, जहर पिलाकर मार दो इसको। जहर का प्याला दे दिया गया मीराबाई को पीने के लिए। मीराबाई भगवान का चरणामृत कहकर उसको पान कर जाती है। विष का पान करनेवाली मीरा अमर हो जाती है और जिसने विष का प्याला पिलाया, वह मर-सड़-गल कर कहाँ चला गया, जिसका कोई ठिकाना नहीं। जबतक इस पृथ्वीतल पर अध्यात्म-ज्ञान का प्रकाश रहेगा, तबतक मीरा अमर रहेगी।

कबीर साहब की बहत्तर कसनी प्रसिद्ध है। बहत्तर तरहों से कबीर साहब को लोगों ने कष्ट दिया। खालसा इतिहास पढ़िये। नानक साहब के पंथ के गुरुओं के साथ क्या-क्या हुआ। कितने-कितने कष्ट झेलने पड़े हैं, उन गुरुओं को; फिर भी उन गुरुओं ने अपने धर्म को छोड़ा नहीं। अपना सिर देकर आत्मज्ञान का

प्रचार और प्रसार किया। नौवें गुरु तेग बहादुरजी महाराज ने तो स्पष्ट कहा–

धरम हेतु साका जिन कीया।
सीस दिया पर सार न दीया।।

अयोध्या में हुए संत पलटू दासजी महाराज। दुष्टों ने उनको पकड़कर जलती हुई आग में फेंक दिया। संत को कौन पहचानता है? जिन्होंने पहचाना, उसका कल्याण हुआ। शम्स तबरेज ने अपनी खाल खिंचवाई और मंसूर ने अपने को शूली पर लटकवाया; लेकिन सत्य धर्म का त्याग नहीं किया।

एक गुरुभक्तिन थी–सहजोबाई। उसका विवाह हो चुका था। उसकी ससुराल जाने की तैयारी हो रही थी। कोई महिला उसको वस्त्रालंकार से सुसज्जित कर रही थी और कोई उसके बाल को सँवार रही थी। उसी समय संयोगवश उसके गुरु संत चरणदासजी महाराज का पदार्पण होता है। सहजोबाई की साज-सँवार को देखकर संत चरणदासजी महाराज के श्रीमुख से यह वाणी निःसृत होती है–

चलना है रहना नहीं, चलना बिस्वाबीस।
सहजो तनिक सुहाग पै, कहा गुहावै सीस।।

जैसे सूखी दियासलाई पर काठी घिसने से वह भक् करके जल उठती है, उसी तरह गुरुवाक्य-रूपी काठी के घर्षण से सहजोबाई के पूर्व जन्म के शुभ संस्कार जग गये। वह ससुराल जाना छोड़कर गुरु के साथ-साथ चल देती है। गाँव-समाज में गुरु और शिष्य–दोनों की कड़ी आलोचना और काफी निन्दा हुई; किन्तु आगे चलकर जैसे बादल से निकलकर सूर्य चमकता है, वैसे ही दोनों यानी चरणदासजी महाराज और परम गुरुभक्तिन सहजोबाई का यश-प्रकाश संसार में फैल गया। उनका ज्ञान-सूर्य चमक उठा।

हमारे गुरु महाराज (प्रातःस्मरणीय परम पूज्य अनन्त श्रीविभूषित महर्षि मेँहीँ परमहंसजी महाराज) के साथ दुष्टों ने क्या कम अत्याचार किया है। आरम्भ में गुरु महाराज सिकलीगढ़ धरहरा में रहते थे। एक महिला को किसी ने सिखला दिया भूत खेलने के लिए। वह भूत खेलती थी। ओझा आता और उसको पूछता कि तुमको किसने भूत लगाया है, तो वह गुरु महाराज का नाम लेकर कहती कि उसी ने मुझको भूत लगाया है। उस गाँव में एक कबीरपंथी थे। उनका नाम था–श्रीबाबू लाली साहजी उस समय वे गुरु महाराज से दीक्षित तो नहीं थे; लेकिन गुरु महाराज के पास आते-जाते थे। गुरु महाराज के ज्ञान से वे सज्जन प्रभावित थे। उनको मालूम हुआ कि महर्षिजी पर वह महिला झूठ-मूठ आरोप लगा रही है। एक दिन वे जाते हैं उसके पास, जब वह भूत खेल रही थी और गुरु महाराज का नाम बतला रही थी। वे उस गाँव के प्रतिष्ठित व्यक्तियों में थे। उन्होंने उस महिला को डाँटकर कहा–'तुम्हारा सारा भूत हम निकाल देंगे खड़ाऊँ की मार मारते-मारते। हम जानते हैं कि वे कितने बड़े महात्मा हैं और कितनी ऊँची साधना करते हैं। क्या वे भूत लगानेवाले महात्मा हैं? अगर आज के बाद कभी भूत आया, तो खड़ाऊँ से तुम्हारा भूत उतरेगा। उस दिन से भूत भागा, तो भागा ही रह गया। (श्रोताओं की ओर से 'बोलिये श्रीसद्गुरु महाराज की जय' की ध्वनि।)

दूसरी घटना यह है कि एक बार गुरु महाराज को आदर के साथ सत्संगी सज्जनों ने बुलाकर लाया एक गाँव में सत्संग कराने के लिए। निश्चित समय पर गुरुदेव वहाँ पधारे। आम के बगीचे में फूस की एक चौबारी थी। उसी में उनको वासा दिया गया। गुरु महाराज उसमें ठहरे। सत्संग सुनने के लिए काफी लोग उपस्थित हुए। सत्संगीगण में अद्भुत प्रेम और उल्लास था। कार्यक्रम के अनुसार दिन का सत्संग हुआ। रात का भी सत्संग हुआ। खा-पीकर सब कोई सो गए; लेकिन जिसको परम पूज्य गुरुदेव से द्वेष था, उसने क्या किया? जब सब

कोई सो गए, तो उसने उस घर में आग लगा दी, जिसमें गुरुदेव सोये हुए थे। घर से निकलने का जो रास्ता था, वहीं आग लगा दी, जिससे वे निकल न पावें; लेकिन जो संसार को जगाने के लिए आए हैं, वे क्या सोएँगे! उनको कौन जगावेगा? वे जगे हुए थे ही। उनके सेवक बरामदे पर सोये हुए थे। उनको उन्होंने जगाया। बिस्तरा समेटकर बाहर निकल गये। भला जो जगत् के रक्षक हैं, उनका भक्षण कौन कर सकता है!

गुरुदेव की बढ़ती ख्याति और मान-सम्मान को देखकर राग-द्वेष में जलनेवाले उनके कुछ गुरु-भाइयों ने उनकी निन्दा-शिकायत लिखकर पत्र द्वारा सत्संगियों में प्रचार किया। इससे भी जब संतोष नहीं हुआ, तो गुरुदेव के विरोध में उनकी विविध आलोचनाओं की पुस्तक तैयार कर भागलपुर के एक प्रेस में छपने के लिए दी गयी। प्रेस में आग लग जाने के कारण वह पाण्डुलिपि उसी में जलकर भस्म हो गयी। पुस्तक प्रकाशित नहीं हो सकी। इस तरह की बहुत-सी घटनाएँ हैं, कितना गिनाया जाए!

सृष्टिकर्त्ता ने सृष्टि-रचना में गुण-दोष और जड़-चेतन का मिश्रण किया है। यही हेतु है कि सृष्टि के आदिकाल से संसार में संत-असन्त और शिष्ट-अशिष्ट–दोनों प्रकार के लोग होते चले आ रहे हैं। आज भी यह संसार संत-असंत से शून्य नहीं है। दोनों ही धन्य हैं; क्योंकि दोनों ही अपने-अपने कर्त्तव्य-पालन में किंचित् भी कसर नहीं रखते। जैसे क्षीर और नीर मिश्रित रूप से हंस क्षीर को ग्रहण कर नीर को छोड़ देता है, उसी प्रकार विवेकी जन सत्य को, सार को और सद्गुण को ग्रहण कर असत्य का, असार का और अवगुण का परित्याग करते हैं।

जड़ चेतन गुन दोषमय, बिस्व कीन्ह करतार।
संत हंस गुन गहहिं पय, परिहरि बारि बिकार।।

संतों की पहचान बहुत कठिन है। अपनी जान पर खेलकर संतों ने इस ज्ञान का प्रचार किया। वह ज्ञान बाहरी ज्ञान नहीं है, आन्तरिक ज्ञान है। उसके साथ कोई बाहरी आडम्बर नहीं होता, आन्तरिक ज्ञान होता है। वह ज्ञान, जिसको ब्रह्मज्ञान कहते हैं, आत्मज्ञान है, जिससे आत्म-कल्याण होता है; प्रभु की प्राप्ति होती है, आवागमन का चक्र छूटता है।

❖

प्रत्येक क्षण का सदुपयोग

समय धन है। समय धन से भी अधिक मूल्यवान है। धन खो जाए, तो फिर कमाया जा सकता है; लेकिन समय चला गया, तो फिर लौटाया नहीं जा सकता। जो क्षण बीत गया, उसे वापस नहीं लाया जा सकता।

जीवन क्षणों के समूह के सिवा और कुछ नहीं है। अतः आसन-प्राणायाम, गीता-पाठ, कीर्तन, जप, प्रार्थना, ध्यान, गरीबों और साधुओं की सेवा, पाठ्यपुस्तकों की पढ़ाई, अच्छे साधनों से धनोपार्जन आदि में जीवन के प्रत्येक क्षण का सदुपयोग करना चाहिए। घड़ी टिक-टिक करके यह याद दिलाती है कि जीवन का एक-एक क्षण बीता जा रहा है।

ताश या शतरंज खेलने में, सिनेमा देखने में उपन्यास पढ़ने के समय बरबाद न हो। समय का मूल्य जानो। उसका दुरुपयोग करोगे, तो बुढ़ापे में पछताओगे। अपने समय का ठीक-ठीक उपयोग करोगे, तो तुम महान बनोगे। रोज का कार्यक्रम बना लो और उस पर डटे रहो। निश्चय ही तुम सफल होओगे।

–स्वामी शिवानंद सरस्वती

पूज्यपाद महर्षि हरिनन्दन परमहंसजी महाराज

गुरु-वचन

संतमत के वर्तमान आचार्य पूज्यपाद महर्षि हरिनन्दन परमहंसजी महाराज का यह प्रवचन कटिहार जिला संतमत-सत्संग के वार्षिक अधिवेशन, ग्राम-पाँकी में दिनांक २७.०२.२०११ ई० को प्रात:कालीन सत्संग के सुअवसर पर हुआ था। प्रेषक–प्रो० डॉ० गुरु प्रसाद

बन्दउँ गुरु पद-कंज, कृपासिन्धु नररूप हरि।
महामोह तमपुंज, जासु बचन रबिकर निकर।।

मंचासीन श्रद्धेय महात्मागण, धर्मानुरागी सज्जनवृन्द, आदरणीया माताओ एवं पुण्यवती बहनो!

हमलोगों के गुरु महाराज ने कहा है– 'मृगवारि सम सबहि प्रपंचन्ह, विषय सब दुख रूप हैं।'

जो कुछ भी हम संसार में देख रहे हैं, वह मृगतृष्णा-जल के समान है। मृगतृष्णा का जल क्या है? राजस्थान गये होंगे या कोई जाएँगे, तो देखेंगे हजारों कोस बालू-ही-बालू है। उस बालू के स्थान में जेठ महीने में तेज धूप के कारण बालू गरम हो जाता है। उस गरम बालू में आगे देखने पर मालूम पड़ता है कि पानी का ढेव उठ रहा है; लेकिन लोग तो इस बात को जानते हैं कि यहाँ पर पानी नहीं था, तो अभी पानी कहाँ से आएगा। लोग तो इस भ्रम में नहीं पड़ते; लेकिन मृग को जब प्यास लगती है, तो उसको देखने में आता है कि आगे पानी बह रहा है। वह दौड़ता है पानी पीने के लिए। जैसे-जैसे आगे जाता है, वैसे-वैसे उसको होता है कि आगे में पानी है। दौड़ते-दौड़ते परेशान हो जाता है; लेकिन उसका भ्रम छूटता नहीं। उसको यह ज्ञान नहीं होता है कि पानी नहीं है। उसको होता है कि पानी तो हम देख रहे हैं; लेकिन जहाँ पर पानी है, वहाँ पर पहुँच नहीं पाये हैं। इसलिए वह दौड़ना छोड़ता नहीं है। आखिर कब तक दौड़ेगा? हजारों कोस बालू है। जब दौड़ने की शक्ति नहीं रहती, तब वह थककर रुक जाता है; लेकिन अधिक देर तक खड़ा भी नहीं रह पाता; क्योंकि बालू गरम होने से उसका पैर जलने लगता है। छटपटा कर अंतत: वह वहीं धराशायी हो जाता है। मृगा के पैर में एक ही हड्डी होती है। वह बैठ नहीं सकता; इसलिये गाछ के सहारे सोता है। अगर गिर गया, तो उठ नहीं सकता। उसकी जीवन-लीला समाप्त हो जाती है। यही मृगा को जो बालू पर जल का आभास होता है, उसी को मृगतृष्णा का जल कहा है। हमलोगों के गुरु महाराज ने कहा है–'मृग वारि सम सबहिं प्रपंचन्ह।'

संसार में जो सुख का साधन देखते हैं, वह सुखदायक नहीं है। मृग-तृष्णा के जल के समान है। और विषय कैसा? 'विषय सब दुःख रूप हैं।' सब विषय–कौन-कौन विषय? रूप, रस, गंध, स्पर्श और शब्द। आँख का विषय रूप है। जो कुछ भी देखते हैं, वह आँख का विषय है। कोई दृश्य को देखकर हमें विकार उत्पन्न हो जाता है। कुछ ऐसा दृश्य देखते हैं, जिसको देखकर क्रोध उत्पन्न हो जाता है। आँख से कोई अश्लील दृश्य देख लेते हैं, तो काम-विकार उत्पन्न हो जाता है। कोई व्यक्ति अपने माता-पिता को पीट रहा है, तो क्या किसी अच्छे आदमी को देखा जाएगा? उसको क्रोध हो जायेगा। अगर सोना-चाँदी देख लेंगे, तो लोभ भी हो जायेगा। अगर आँख से नहीं देखते, तो लोभ नहीं होता। केवल आँख के विषय से ऐसा होता है सो नहीं; कान के विषय से भी काम, क्रोध

आदि विकार उत्पन्न होते हैं। जैसे–सिनेमा का गीत, अश्लील बात सुनने पर काम-विकार उत्पन्न होता है। अगर हम सुन लेंगे कि हमको कोई गाली दे रहा है, तो क्रोध भी आ जाता है। यह विकार जीव को कहाँ ले जाता है?

विभीषण ने रावण से कहा था–'**काम क्रोध मद लोभ, नाथ नरक कर पंथ।**' यह नरक की ओर ढकेलनेवाला है। जिस विषय को हम सुखदायक मानते हैं, उसके लिए हमलोगों के गुरु महाराज ने कहा है–'**विषय सब दुख रूप हैं।**' इसको सन्तलोग जानते हैं, हमलोग नहीं जानते हैं। जैसे छोटा बच्चा नहीं जानता कि हम साँप को पकड़ेंगे, तो साँप काट लेगा। आग को छूएँगे, तो हाथ जल जायेगा। जाने या न जाने, आग छूएँगे, तो हाथ जलेगा ही। साँप को वह पकड़ेगा, तो साँप काटेगा ही; लेकिन जब माँ देख लेती है कि बच्चा साँप की ओर बढ़ रहा है, तो वह झट से उठा लेती है। उसी तरह से हमलोग साधारण प्राणी विषयों को ग्रहण करके सुखी होना चाहते हैं; लेकिन सन्त लोग अहितकर समझकर उससे वियोग करा देते हैं। 'सब विषयों का भोग, गुरु कहते हैं रोग, करा देते वियोग।' वे वियोग करा देते हैं। हमलोग उसके लिए व्याकुल भी हो जाते हैं। जो हम चाहते थे, सो नहीं मिला, तो व्याकुलता होती है।

नारदजी के मन में विवाह करने की इच्छा हो गई। जिस कन्या के साथ उसका विवाह करने का मन हुआ, देखा कि उससे विवाह करने के लिए बहुत-से राजा लोग आये हैं। बड़े रूपवान, बलवान, तेजवान उन राजाओं को छोड़कर हमारे साथ वह राजकुमारी विवाह करे, यह सम्भव नहीं होगा। यह कब हो सकता है? जब भगवान अपना रूप हमको दे दें, तब राजकुमारी हमको वरण कर लेगी। सोचा भगवान विष्णु तो भक्तवत्सल हैं, वे अपने भक्त के मन की सब बात जानते हैं। उन्हीं का सुमिरण करूँ। नारदजी भगवान विष्णु का सुमिरण किये। भगवान विष्णु उनके सामने प्रकट हो गये। उन्होंने कहा–नारदजी! आपने क्यों याद किया? कहा–'भगवान्! राजकुमारी का स्वयंवर होनेवाला है। बहुत-से राजा लोग आये हैं। मेरी इच्छा है कि मेरा विवाह उसके साथ हो। यह तब होगा, जब आप अपना सुन्दर रूप हमको देंगे। राजकुमारी राजी हो जायेगी और वह हमारे गले में वरमाला डाल देगी।' भगवान विष्णु ने कहा–'नारदजी! आप मेरे भक्त हैं, आपका जिसमें कल्याण होगा, वही मैं करूँगा।' यह कहकर तुरंत अपने समान उनका शरीर कर दिये। गले से नीचे भगवान विष्णु अपने समान शरीर कर दिये और मुँह बना दिये बन्दर-सा। नारदजी अपना मुँह तो नहीं देख पाए, शरीर को देखा, तो बड़ी प्रसन्नता हुई कि भगवान विष्णु ने अपना रूप हमको दे दिया। अब राजसभा में जाकर बैठे। उनको पूरा विश्वास हो गया कि अब तो राजकुमारी निश्चितरूप से हमारे गले में वरमाला डालेगी। राजकुमारी जब वरमाला लेकर निकली, तो बन्दर के समान मुँह देखकर उस ओर से मुड़ गई। आगे बढ़ गई। नारदजी को हुआ कि हमको वे देख नहीं सकी, इसीलिए आगे बढ़ गई। फिर आगे जाकर बैठ गए।

कई बार नारदजी उठ-उठकर गये; लेकिन नारदजी के गले में वरमाला नहीं डाली। भगवान विष्णु उस राजसभा में राजकुमार का वेश बनाकर आये। उन्हीं के गले में वरमाला डाल दी। अब तो नारदजी व्याकुल हो गये। सोचने लगे भगवान विष्णु अपना रूप हमको दिये, फिर भी राजकुमारी हमारे गले में वरमाला नहीं डाली। उनकी व्याकुलता को देखकर शिवजी के गण जो वहाँ पर थे, उन्होंने कहा–'जरा अपना चेहरा ऐना में देखिये।' जल में अपना मुँह देखा, शरीर तो भगवान विष्णु के समान और मुँह बन्दर के समान। उनको बहुत क्रोध हुआ कि भगवान भी इतना छल करनेवाले हैं। उसने सोचा कि भरी सभा में हमारी इतनी हँसी करायी, अब मैं उनको ऐसा शाप दूँगा कि वे खूब कष्ट भोगेंगे। क्रोधित होकर जा रहे थे।

कुछ ही दूर आगे गये, तो देखे कि भगवान विष्णु उस राजकुमारी को अपने साथ ले जा रहे हैं। उसके साथ में लक्ष्मीजी भी हैं। उसे देखते ही आग बबूला हो गये। नारदजी ने कहा–'तुम बहुत छल करनेवाले हो। तुमने मनुष्य-शरीर धारण करके हमारे साथ छल किया है। तुमको भी मनुष्य-शरीर धारण करना पड़ेगा। हमको स्त्री के वियोग में दुःख सहाया, तो तुमको भी स्त्री का वियोग होगा। हमको बन्दर का चेहरा दिया, तो बन्दर तुम्हारी सहायता करेगा।' ऐसा शाप दे दिया।

भगवान विष्णु उस शाप को स्वीकार कर लिये और अवतार लेकर मनुष्य का शरीर धारण किये। अपने पिताजी की आज्ञा का पालन करने के लिए जंगल गये। वहाँ पर सीताजी का अपहरण हो गया। नारदजी ने देखा कि मैंने क्रोध में आकर भगवान को शाप दे दिया, इसी कारण उनको मनुष्य का शरीर धारण करना पड़ा और स्त्री के वियोग में वे दुःख पा रहे हैं। मैंने अच्छा नहीं किया। सोचा, अब तो जो हो गया, सो हो गया। भेंट करने के लिए गये। भेंट करने पर पूछा–'भगवन्! मैंने जब विवाह करना चाहा, तो आपने विवाह करने क्यों नहीं दिया।' भगवान राम ने कहा–'नारदजी! छोटा बच्चा वह चीज खाना चाहता है, जो उसके लिए हानिकारक है। माँ जानती है कि इसके लिए हानिकारक है, डॉक्टर ने मना किया है अमुक चीज इसको खाने मत देना, कितना भी वह रोता है; लेकिन माँ उसको खाने नहीं देती है। वह जानती है कि उसके लिए यह अहितकर होगा। बच्चा आग छूना चाहे, साँप छूना चाहे, तो वह छूने नहीं देती। उसके हित के लिए ऐसा करती है। ठीक उसी तरह से आपने जो विवाह करना चाहा, विवाह करके आप नीचे गिरते। आपकी रक्षा के लिए मैंने ऐसा किया।'

कवन भाँति हरि कृपा तुम्हारी, सो स्वामी समुझ न परी।

ईश्वर–परमात्मा, सन्त सद्गुरु लोगों की रक्षा किस तरह से करते हैं, साधारण लोग इस बात को कैसे जानेंगे!

दादू जानै न कोइ, संतन की गति गोई।

सन्त लोग किस तरह से उपकार करते हैं, सर्वसाधारण नहीं जान पाते। एक बहुत उच्च कोटि के महात्मा थे। बड़े त्यागी थे। फूस की झोपड़ी भी अपने लिये नहीं बनाये थे। बाहर में कहीं रह जाते थे। गाँव-घर में नहीं रहते थे। नदी के किनारे गाछ के नीचे, ध्यान-भजन करना और दिन में एक बार माँगकर भोजन कर लेते थे। माँगने के लिए भी कब जाते थे, पिछले पहर दिन में। देखते थे सब कोई खा-पी चुके होंगे, तब जाते थे। अगर पहले जायेंगे, तो हो सकता है कि अपना हिस्सा दे देंगे। लोग खा पी लेंगे, तब जो बचा रहेगा, वह हमको देंगे। जो कुछ मिलता था, एक जगह पूरा नहीं हुआ, तो दो जगहों से लेकर हल्का भोजन कर लेते थे। एक ही गाँव में बराबर नहीं जाते थे। इसी तरह से वे रह रहे थे। एक व्यक्ति के मन में हुआ कि मैं भी महात्माजी की शरण में रहकर ध्यान-भजन करूँ। उनसे कहा–'बाबा! मेरी भी इच्छा है कि आपकी शरण में रहकर ध्यान-भजन करूँ।' उसने कहा–'ठीक है, तुम्हारी इच्छा है, रहना चाहते हो तो रहो; लेकिन हमारे पास तो खाने-पीने का कुछ नहीं है। भूख लगने पर हम भिक्षा माँगकर खाते हैं। हम माँगने के लिए जाते हैं। माँगकर खाते हैं। तुमको भी उसी तरह से माँगकर खाना पड़ेगा। बाहर जाने पर ही भोजन मिलेगा। इस तरह से रहकर ध्यान-भजन करना चाहते हो, तो रहो और करो; लेकिन एक बात का याद रखना, जब हम कहीं जाते हैं, तो कहीं पर हमारा आदर होता है, तो कहीं अनादर भी होता है। हमारा कहीं अनादर हो जाय, तो तुम कुछ नहीं बोलना।' कहा–'ठीक है, हमको क्या आवश्यकता है।'

एक दिन वह और महात्माजी बहुत सम्पत्तिवान के यहाँ चले गये। सम्पत्ति उनको बहुत अधिक थी; लेकिन अभिमान भी बहुत था। धन के अभिमान में आकर किसी को कुछ नहीं समझते थे। उनके यहाँ जब माँगने के लिए गये, उस समय गृहपति कुर्सी पर बैठे हुए थे। महात्माजी ने कहा–हमलोगों को भूख लगी है,

कुछ खाने के लिये दीजिए। सम्पत्तिवान व्यक्ति देखकर हँसने लगे और कहा—देखो न, कैसा ढोंगी है। साधु का वेश बना लिया है काम के डर से और माँग-माँगकर खाता है। इस तरह से ये लोग देश को चौपट कर देंगे और भी बहुत अनाप-सनाप कहा। महात्माजी कुछ नहीं बोले। जब वह अनाप-सनाप कहते-कहते चुप हो गया, तब महात्माजी ने पुनः कहा—अच्छा कुछ खाने के लिये दीजिए, हमलोग चले जायेंगे। अब तो उस व्यक्ति ने गाली देना शुरू किया। गाली भी कितनी देर तक देगा। गाली देते-देते जब चुप हो गया, तब पुनः तीसरी बार महात्माजी ने कहा—'अच्छा कुछ दे दीजिए खाकर चले जायेंगे।' अब तो उनका क्रोध और बढ़ गया और ऊँची आवाज में कहने लगा—'कैसा पतित आदमी है! गाली देने पर भी नहीं हटना चाहता है।' कुर्सी पर से उठा और हाथ से ठेलते हुए अपने द्वार से नीचे उतार दिया और कहा—'बाप ने कमा करके रखा है। भागो यहाँ से।'

महात्माजी जाते-जाते कहा कि धन तुम्हारा दुगुना हो जाय। उनके साथ में जो सेवक था, उनको बड़ा खराब लगा। उसने कुछ दिया नहीं, कितने अपशब्द बोले, गालियाँ दीं और महात्माजी ने उनके धन को दुगुना होने का आशीर्वाद दे दिया। कुछ कहने का मन तो हुआ; लेकिन महात्माजी की बात याद आ गई कि महात्माजी ने तो पहले ही कह दिया है कि हमारा कहीं पर अनादर होगा, तो तुम कुछ बोलना नहीं। इसी कारण वे चुप रहे। महात्माजी जाते-जाते उसी गाँव में एक बूढ़ी थी, उसको कोई नहीं था। एक जवान पुत्र मर गया था, पुतोहू भी पुत्र के वियोग में शरीर त्याग चुकी थी। केवल एक छोटा पोता था। जो सात साल का था, वह खेल रहा था। बूढ़ी को एक छोटी-सी फूस की झोपड़ी थी। ऐसी झोपड़ी थी कि उसमें भी पानी चूवे। कोई तो और था, नहीं किसी तरह से रह रही थी। दूसरों का कुछ काम-धंधा कर देती थी। उसी से जो कुछ होता था, अपने भी खाती थी और पोते को खिलाती थी। बूढ़ी की झोपड़ी के पास जब महात्माजी पहुँचे, तो संयोग से बूढ़ी झोपड़ी के ही पास थी।

महात्माजी ने कहा—माई! बहुत जोर की भूख लगी है, कुछ खाने के लिए दोगी। बूढ़ी के मन में बड़ी प्रसन्नता हुई। आज तक कोई भीखमँगा भी हमारे यहाँ भीख माँगने नहीं आया; क्योंकि भीखमँगा भी समझता था कि इसके पास तो कुछ नहीं है, इसलिए भीखमँगा भी नहीं आते थे। आज महात्माजी आये हैं। यह देखकर उसे बड़ी प्रसन्नता हुई। माई ने कहा—आइये बाबा! आइये। बहुत सम्मान के साथ बैठने के लिए बोरा का आसान दिया। बहुत प्रसन्नता के साथ उसने महात्माजी को भोजन कराया। उन दोनों को भोजन कराने के बाद कुछ बचा नहीं; लेकिन बूढ़ी माई के मन में जरा-सा भी क्षोभ नहीं कि ये सब खा गये, पोता को क्या खिलाएँगे! हम भूखें रहे तो रहें छोटा बच्चा है, उसको क्या खिलाएँगे! सो नहीं, उसके मन में बड़ी प्रसन्नता हुई कि आज जीवन में पहली बार महात्मा को भोजन कराये। उसी क्षण उसका पोता आ गया बूढ़ी ने पोता से कहा—बाबा को प्रणाम करो। उस बच्चे ने प्रणाम किया। फिर महात्मा जी से बूढ़ी ने कहा—बाबा! यह मेरा पोता है, सात साल का हो गया है। जवान बेटा था, वह मर गया। उन्हीं के शोक में पुतोहू ने भी शरीर त्याग दिया। अब यही एक मात्र पोता है। सात साल का हो गया है। इसको आप आशीर्वाद दीजिए; क्योंकि अब यही एकमात्र हमारा सहारा है। मैं तो बूढ़ी हो गई हूँ। अभी तो लोगों का काम-धंधा कर देती हूँ, उसी से इसको भी खिलाती हूँ और मैं भी खाती हूँ। लेकिन, कुछ समय के बाद ऐसा होगा कि मैं चल-फिर नहीं सकूँगी, अपना काम भी अपने से नहीं होगा, तो दूसरे का क्या काम करूँगी। उस समय तो यही पोता ही सहारा होगा। यही खाने के लिए अन्न देगा। पीने के लिए पानी देगा। सब कुछ यही करेगा। इसको आप आशीर्वाद दीजिए।

महात्माजी उस बच्चे को देखते हुए बोले—माई! यह तो सातवाँ रोज मर जायेगा।

अब तो बूढ़ी बहुत व्याकुल हो गई। बेटा तो मर ही गया, पोता भी सातवाँ रोज मर जायेगा, अब हमारी क्या हालत होगी? खूब रोने लगी। महात्माजी जाते-जाते बोले कि तुम इतना क्यों रोती हो? तुम भी आठवाँ रोज मर जाओगी। यह कह महात्माजी वहाँ से चल दिये। साथ में जो सेवक था। उससे रहा नहीं गया। उसने कहा—महात्माजी! आप बड़े विचित्र महात्मा हैं। उस व्यक्ति ने आपको गालियाँ दीं, अपशब्द कहा, धक्का देकर दरवाजे पर से उतार दिया, उसको तो आपने आशीर्वाद दिया कि धन दुगुना हो जाय, यह बूढ़ी माई जिसने बड़े प्रेम से आपको भोजन कराया, उनको आपने शाप दे दिया।

महात्माजी ने कहा—बेटा! तुम नहीं जानते हो! अरे! साधु लोग किसी का अहित नहीं करते हैं। साधु तो सबका हित ही करते हैं। उसने कहा—उसका तो आपने हित किया, यह तो हम समझ गये कि इतना अपशब्द कहने और गालियाँ देने पर भी आपने उनको आशीर्वाद दिया कि आपका धन दुगुना हो जाएगा। इसको तो आपने शाप दे दिया। महात्माजी ने कहा—तुम नहीं जानते हो, इसीलिए कहते हो। मैंने उसका किस तरह से हित किया है, तुम नहीं जानते हो। सेवक ने कहा—बाबा! हमको जानकारी करा दीजिये। महात्माजी ने कहा—देखो! उस व्यक्ति को पहले जन्म का इतना पुण्य था। जिससे दो जन्मों तक इतनी ही सम्पत्ति उसको मिलती; लेकिन धन पाकर कितना वह बौरा गया है, धन के अभिमान में चूर होकर कितना पाप किया है। जैसे खेत में थोड़ा-सा बीज डालते हैं; लेकिन उपजता है बहुत, उसी तरह से थोड़ा-सा पुण्य करने से बहुत होकर मिलता है और थोड़ा-सा पाप करने से बहुत होकर मिलता है। यह अभी तक के जीवन में इतना पाप किया है कि कितने जन्मों तक दुःख भोगेगा, इसका ठिकाना नहीं। अगर दो जन्मों तक इनको इतनी सम्पत्ति मिलती, तो धन के अभिमान में कितना अधर्म इनसे होता। धन तो दुगुना कर दिये; लेकिन पाप तो करेगा एक ही जीवन में। आधा हलका हो जायेगा। उसका तो इस तरह से मैंने उपकार किया। धन तो दो जीवन में होना था, एक ही जीवन में कर दिया। दूसरे जीवन में इसको धन नहीं मिलेगा। जब यह भीखमँगा होकर जन्म लेगा, तब इतना अभिमान नहीं रहेगा। तब वह पाप कैसे करेगा! इस बच्चे के लिए समझते हो कि शाप दे दिया—अरे, बच्चा का तो थोड़ा-सा चूक था, इसीलिये बूढ़ी के यहाँ जन्म हुआ। अभी तक इसको बढ़िया भोजन नहीं, बढ़िया वस्त्र नहीं, बढ़िया मकान नहीं, फूस की झोपड़ी में इतना इनको कष्ट हुआ है। इसका शरीर छूटने पर पहले वह स्वर्ग जाएगा। स्वर्ग सुखों को भोगेगा, इसके बाद इसका जन्म राजा के यहाँ होगा। इसका हित हुआ या अहित हुआ! बूढ़ी के लिये—बूढ़ी का तो उतना पुण्य नहीं था; लेकिन आज उसने स्वयं भूखे रहकर हम दोनों को प्रेम से भोजन कराया, इसलिये इनको कहा—तुम आठवाँ रोज शरीर त्याग कर देगी। यह अपना शरीर त्याग कर स्वर्ग में जायेगी। यहाँ पर बूढ़ी को क्या सुख है, यहाँ तो दुःख-ही-दुःख है। शरीर इसका छूटेगा, यह भी स्वर्ग जायेगी।

सन्तन की गति कोई दादू जानै न गोई।

इसलिये सन्त की शरण में जाने की आवश्यकता है। सन्त की शरण में जायेंगे, तो वह सुख जिस सुख को प्राप्त करने के लिए भगवान बुद्ध राज्य-सुख का परित्याग किये थे। अगर राज्य-सुख से विशेष सुख नहीं होता, तो भगवान बुद्ध राज्य का परित्याग नहीं करते। राज्य-सुख से भी बढ़कर कोई सुख है! वह सुख जो सन्त सद्गुरु की शरण में जाते हैं, उनको मिलता है। उस सुख को मनुष्य ही प्राप्त कर सकते हैं, अन्य किसी से नहीं हो सकता। उसकी प्राप्ति की युक्ति बतलानेवाले होते हैं सन्त सद्गुरु। बिना गुरु के नित्य सुख, परम सुख की प्राप्ति नहीं होती। हमलोग संत सद्गुरु की शरण में जायें—उनसे सद्युक्ति जानकर, उपासना करेंगे, तब हमलोगों का इहलोक और परलोक दोनों सुखमय बनेगा। ❖

शान्ति-स्वरूप सर्वेश्वर जानो

–पंडित श्रीविष्णुकान्तजी महाराज

उपस्थित सज्जनवृन्द तथा देवियो!

आपलोग पूर्व वक्ता से सुन चुके हैं कि इस सत्संग का विषय क्या है? ईश्वर की प्राप्ति में ही जीवों को शान्ति मिल सकती है। ईश्वर की भक्ति में जो अयोग्य है, उसकी बुद्धि स्थिर नहीं रह सकती। जिनको शान्ति प्राप्त नहीं, उनको सुख कहाँ? गुरुदेव के वचन में है– 'शान्ति-स्वरूप सर्वेश्वर जानो।' उपनिषद् में है कि शान्ति किनको मिलती है–

भिद्यते हृदय ग्रन्थिश्छिद्यन्ते सर्व संशयाः ।
क्षीयन्ते चास्य कर्माणि तस्मिन्दृष्टे परावरे ।।

अर्थात् जो परे से परे तत्त्व यानी परमात्मा को प्राप्त कर लेते हैं, उनके हृदय की ग्रंथि टूट जाती है और सारे संशय उनके नष्ट हो जाते हैं। उनके ऊपर कोई कर्म-बन्धन नहीं रहते। ऐसे ही महापुरुष को शान्ति प्राप्त होती है।

ईश्वर की प्राप्ति जिस साधन से हो, उसी को कहते हैं–भक्ति। ईश्वर की भक्ति क्यों करें? ईश्वर में कौन-कौन गुण हैं। इसको सत्संग के द्वारा जानना चाहिए। यों तो लोग प्रभुता को ही भजते हैं। संत कबीर साहब ने कहा है–

प्रभुता को सबहिं भजै, प्रभु को भजै न कोय ।
प्रभुता तजि प्रभु को भजै, तो प्रभुता चेरी होय ।।

भक्ति से ही प्रभु के गुण को ग्रहण कर सकते हैं। भक्ति में प्रेम की प्रधानता है। बिना प्रेम के भक्ति टिकती नहीं है। संत कबीर साहब ने बड़ा ही अच्छा कहा है–

प्रेम बिना जो भक्ति है, सो निज डिंभ विचार ।
उद्र भरन के कारने, जन्म गँवायो सार ।।

जिस भक्ति से परमात्मा की प्राप्ति हो, वही असली भक्ति है। ईश्वर कैसे हैं? यह हमलोग नित्य ईश-स्तुति में गाते हैं–

'सब क्षेत्र क्षर अपरा परा पर औरु अक्षर पार में ।
निर्गुण सगुण के पार में, सत् असत् हू के पार में ।।'

परम प्रभु परमात्मा केवल पार ही में-नहीं हैं। वे अनन्त-स्वरूपी होने के नाते सर्वव्यापक भी हैं। वे सृष्टि के अणु-परमाणु में भी व्यापक हैं। परमात्मा की महिमा का वर्णन गोस्वामी तुलसीदासजी ने रामचरितमानस में बहुत ही अच्छी तरह किया है–

राम काम सत कोटि सुभग तन ।
दुर्गा कोटि अमित अरि मर्दन ।।
सक्र कोटि सत सरिस बिलासा ।
नभ सत कोटि अमित अवकासा ।।

जो परमात्मा सौ करोड़ कामदेव के समान सुन्दर हैं, सौ करोड़ दुर्गा के समान दुष्टों का संहार करनेवाले हैं, जिसमें सौ करोड़ आकाश से भी विशेष अवकाश है, उनकी ही मौज से सारी सृष्टि चलायमान है। ऐसे परमात्मा की निष्काम भक्ति होनी चाहिए। संत कबीर साहब ने बड़ा अच्छा कहा है–

जब लगि भक्ति सकाम है, तब लगि निस्फल सेव ।
कहै कबीर कैसे मिलै, निःकामी निजदेव ।।

परमात्मा की भक्ति बाहर नहीं, अपने घट में की जाए, तो सौ करोड़ दुर्गा से भी अधिक शक्तिवाले परमात्मा को पा सकेंगे।

आज जनसंख्या की वृद्धि पर लोग चिंता कर रहे हैं; लेकिन जो परमात्मा सौ करोड़ विष्णु के समान पालनकर्त्ता हैं, उनकी शरण में जानेवाले की रक्षा अवश्य होगी। यथा–

विष्णु कोटि सत पालन करता।

–रामचरितमानस

इतना ही नहीं सौ करोड़ सरस्वती के सामन चतुर और विद्या देनेवाले हैं–

सारद कोटि अमित चतुराई। –रामचरितमानस

इतना कह देने पर भी गो० तुलसीदासजी ने कहा–परमात्मा की कोई उपमा नहीं है।

निरुपम न उपमा आन राम, समान राम निगम कहै ।
जिमि कोटि सत खद्योत सम रवि, कहत अति लघुता लहै ।।

ऐसे परमात्मा को प्राप्त किये बिना शांति नहीं और शांति नहीं, तो सुख कहाँ? ❖

❖ यह प्रवचन अखिल भारतीय संतमत-सत्संग के ६८वें वार्षिक महाधिवेशन के अवसर पर पूर्णियाँ जिले के भवानीपुर राजधाम में ९ मार्च, १९७६ ई० को हुआ था।

तीन चेतावनियाँ

–भगवान बुद्ध

१. क्या तुमने संसार में कभी अस्सी, नब्बे या सौ वर्ष के बूढ़े, जराजीर्ण, तिकोने छप्पर के समान टेढ़े, झुके हुए, लाठी का सहारा लिए, लड़खड़ाते पाँववाले, शिथिल, बहुत पूर्व युवावस्था से रहित, टूटे दाँतवाले सफेद या छितरे बालवाले या गंजे, झुर्रीदार या सूजे अंगवाले पुरुष या स्त्री को नहीं देखा?

और क्या तुम्हारे मन में यह विचार कभी नहीं उठा कि तुम्हारा भी क्षय होगा और तुम इससे बच नहीं सकते?

२. क्या तुमने संसार में कभी ऐसे पुरुष या स्त्री को नहीं देखा, जो रुग्ण–व्याधिग्रस्त और अत्यंत अस्वस्थ हो, जो अपनी ही विष्ठा में लिपटा हो और जिसे कुछ लोग उठाते तथा कुछ लोग खाट पर सुलाते हों?

और क्या तुम्हारे मन में यह विचार कभी नहीं उठा कि तुम भी रुग्ण हो सकते हो और तुम इससे बच नहीं सकते?

३. क्या तुमने संसार में कभी किसी पुरुष या स्त्री के शव को मृत्यु के दो या तीन दिन बाद फूले हुए, काला या नीला हुए और विघटित हुए नहीं देखा?

और क्या तुम्हारे मन में यह विचार कभी नहीं उठा कि तुम भी मृत्यु को प्राप्त होगे और तुम इससे नहीं बच सकते?

□

प्रार्थना से अनेक लाभ

–स्वामी शुकदेवानंद सरस्वती

एक कुत्ते को भी रोटी का एक टुकड़ा डाल दो, तो वह भी पूँछ हिलाकर मालिक की प्रार्थना करके तब रोटी खाता है। क्या हम कुत्ते से भी गये बीते हैं कि जिस ईश्वर ने हमको सब कुछ दिया है, उसकी हम प्रार्थना भी न करें? इससे बड़ा पाप और कौन हो सकता है? विचार करके देखा जाए, तो मनुष्य थोड़े-से धन के लिए धनवान की प्रार्थना करता है, बल के लिए बलवान की प्रार्थना करता है, विद्या के लिए विद्वान की प्रार्थना करता है; तब हमें धन, बल या विद्या प्राप्त होती है। अगर हम ईश्वर की प्रार्थना करें, तो ईश्वर सर्व शक्तिमान है, उससे हमें सारी शक्तियाँ प्राप्त हो सकती हैं।

ईश्वर की प्रार्थना करने से स्वयं को तो लाभ होता ही है; परन्तु इससे सारे विश्व को भी लाभ पहुँचता है। प्रार्थना से वातावरण शुद्ध होता है। आज देश और विश्व में वातावरण अशुद्ध हो रहा है। देश और विश्व का वातावरण शुद्ध हो, इसके लिए प्रार्थना हर मनुष्य को करनी चाहिए। अगर लोग ईश्वर की प्रार्थना करेंगे, तो वे प्रार्थना के शब्द सारे विश्व में फैल जाएँगे और उससे बहुत लाभ हो सकता है–यह विज्ञ पुरुष स्वयं समझते हैं।

□

तीन बातें

१. इन तीन को याद रखें–गुरु, सत्संग, ध्यान। २. इन तीन को वश में रखें–क्रोध, मन, जुबान। ३. इन तीन को विशेष महत्त्व दें–अच्छी आदतें, गुरु-सेवा, गुरु-कृपा। ४. इन तीन की बात मानें–संत, गुरु और सज्जन। ५. इन तीन का त्याग करें–स्वार्थ, लोभ, ईर्ष्या। ६. इन तीन को स्वच्छ रखें–तन, मन, वसन। ७. इन तीन को बढ़ावें–सत्कर्म, अच्छी पुस्तकें, अच्छे मित्र। ८. इन तीन पर विश्वास करें–आत्मा, परमात्मा, गुरु। ९. तीन व्यक्तियों की मदद करें–गरीब, बीमार, संकटग्रस्त। १०. तीन बातों से नफरत करें–बड़ाई, झूठ, नशा। □

इस जड़ जगत में भी एक महाचैतन्य लोक ओत-प्रोत है

योगीराज तैलंग स्वामीजी महाराज एक दिन जैसी उनकी आदत थी, दशाश्वमेघ घाट पर बहुत-से लोगों के बीच घूम रहे थे। इस दृश्य को देखकर नया मजिस्ट्रेट आग-बबूला हो उठा। फौरन ही संन्यासी को पकड़ कर हाजत में बन्द कर दिया गया। स्वामीजी के भक्तों एवं विशिष्ट नागरिकों की अनुनय-विनय पर उसने कुछ भी ध्यान नहीं दिया।

दूसरे दिन साहब इस नये कैदी को हाजत में देखने गया। वहाँ पहुँचते ही वह आश्चर्यचकित हो गया। देखा कि संन्यासी परम निश्चिन्त मन से हाजत के बरामदे पर टहल रहे हैं। किस प्रकार ताला बन्द हाजत से वह बाहर निकल आए, कोई बता नहीं सकता। मजिस्ट्रेट क्रुद्ध हुआ और उसने पहरा देनेवालों को बुलाया। तैलंग स्वामीजी को जिस कमरे में बंद किया गया था, उसका दरवाजा पहले की तरह बन्द था। साहब ने अपने अनुचरों के साथ लोहे का दरवाजा, ताला, कुंजी कमरे की दीवाल सब कुछ की अच्छी तरह जाँच-पड़ताल की। बंद कैदी हाजत से बाहर निकल सकता है, ऐसा कोई भी उपाय समझ में नहीं आया।

मजिस्ट्रेट ने गम्भीर भाव से तैलंग स्वामीजी से प्रश्न किया–'साधु! ठीक-ठीक बताओ, तुम किस तरह हाजत से बाहर निकल आये?'

स्वामीजी ने सहज भाव से कहा–'प्रभात में बाहर आने की मेरी इच्छा हुई और इच्छा होते ही क्षण भर में मैं बाहर निकल आया, इसमें कोई बाधा नहीं हुई।'

स्वामीजी के इस कथन को सुनकर मजिस्ट्रेट और भी क्रुद्ध हो उठा। स्वामीजी को फिर हाजत में रखकर और अपने हाथ से दोहरा ताला लगाकर मजिस्ट्रेट वहाँ से कोर्ट चला गया। कुछ ही क्षणों के बाद फिर एक अद्भुत दृश्य देखा गया। साहब ने देखा, हाजत की बात तो दूर रही, इस बार उसके इजलास के कमरे के एक कोने में ही नग्न संन्यासी खड़े हैं। उनके मुख-मंडल पर कौतुक-चपल मृदु हास्य की छटा विराज रही है। इस असम्भव घटना को देखकर मजिस्ट्रेट की अक्ल गुम हो गई।

योगिराज तैलंग स्वामीजी महाराज धीरे-धीरे चलकर साहब के सम्मुख उपस्थित हुए। प्रशान्त कण्ठ से कहने लगे–'साहब तुम दूसरे लोगों की तरह केवल जड़-शक्ति में ही विश्वास करते हो। इस जड़ जगत् में भी एक महाचैतन्य लोक ओत-प्रोत है, जो तुम्हारे लिए अज्ञात है। उस चैतन्य लोक के साथ जिसका सम्पर्क स्थापित हो गया है, कोई बन्धन, कोई बाधा, उसके स्वेच्छा-विचरण को रोक नहीं सकती। भारतीय योगियों के लिए संसार का कोई भी कार्य कभी असाध्य नहीं हो सकता। बोलो तो, ऐसे साधु-संन्यासियों को परेशान करके तुम्हें क्या मिलेगा? इसके सिवा तुम में यह शक्ति ही कितनी है?' □

(भारत के महान साधक नामक ग्रंथ से उद्धृत)

किम् आश्चर्यम्

महाभारत के यक्ष-प्रश्न-प्रसंग में यक्ष ने युधिष्ठिर से पूछा–'किम् आश्चर्यम्?'–आश्चर्य क्या? 'यक्ष का तात्पर्य यह था कि संसार में सर्वाधिक आश्चर्य की बात क्या है?' युधिष्ठिर उत्तर में कहते हैं–'दिन-प्रतिदिन प्राणी यमलोक पहुँच रहे हैं, पर जो बचे हैं, वे कभी ऐसा नहीं सोचते कि उन्हें भी एक दिन यमलोक जाना है। इससे बढ़कर आश्चर्य की बात क्या हो सकती है?' ❖

मन रे, क्यों गुमान अब करना

–महाराज श्रीचरण सिंहजी (अमृतसर)

मन रे, क्यों गुमान अब करना।
तन तो तेरा खाक मिलेगा, चौरासी जा पड़ना।।

हमारी आत्मा उस परमात्मा का अंश है, हम उस परमात्मरूपी समुद्र की बूँदें हैं और जबतक हमारी आत्मा वापस जाकर परमात्मा से नहीं मिलती, उसका जन्म-मरण के दुःखों से कभी किसी हालत में भी छुटकारा नहीं हो सकता। इसीलिए हम सबको उस परमात्मा की तलाश है। महात्मा समझाते हैं कि यह मनुष्य-चोला परमात्मा ने अपनी भक्ति और अपने प्यार के लिए हमें बख्शा है। चौरासी लाख योनियाँ भुगतने के बाद हमें यह मौका परमात्मा सिर्फ इसलिए देता है कि हम इस देह में बैठकर मालिक की भक्ति कर सकें और इस प्रकार देह की कैद से हमेशा के लिए छुटकारा प्राप्त कर सकें। यह जो कुछ भी हम देख रहे हैं, यह चौरासी का बहुत बड़ा जेलखाना है। इस जेलखाने से निकलने का परमात्मा ने सिर्फ एक ही दरवाजा रखा है और वह है मनुष्य का चोला। जो मनुष्य इस चोले में बैठकर आत्मा और मन की गाँठ खोल लेते हैं, अपने आपको पहचानने के योग्य हो जाते हैं, परमात्मा भी उनपर दया–मेहर करके उन्हें अपने साथ मिला लेता है; परन्तु अगर मन के अधीन होकर इन्द्रियों के भोगों में फँसकर दिन-रात बुरे व खोटे कर्म ही करते रहेंगे, तो इन कर्मों का नतीजा हमें बार-बार इस चौरासी के जेलखाने में आकर भुगतना पड़ेगा। गुरु अर्जुनदेव उपदेश देते हैं–

लख चउरासीह जोनि सबाई। मानस कउ प्रभि दीई वडिआई।।
इसु पउड़ी ते जो नर चूकै, सो आइ जाइ दुखु पाइदा।।
(आदिग्रंथ, पृ० १०७५)

परमात्मा ने सारी दुनिया की रचना करके इसे चौरासी योनियों में बाँट दिया है। बड़ाई किसे बख्शी है? मनुष्य-चोले में बड़ाई बख्शी है। वह सीढ़ी का आखिरी डंडा है। अगर पैर फिसलेगा, तो नीचे आ गिरेंगे और अगर मालिक की भक्ति करके मालिक से विसाल (मिलाप) कर लेंगे, तो वह हमें अपने साथ मिला लेगा और फिर बिछोह नहीं होगा। अगर हम परमात्मा को भूलकर मन के ताबे (अधीन) होकर दिन-रात बुरे और खोटे कर्म करते रहते हैं, तो इस सीढ़ी से नीचे गिर जाते हैं अर्थात् मनुष्य के जन्म से वापस नरकों में जाना पड़ता है, निचली योनियों में जाना पड़ता है, जिनमें से पहले ही बड़ी मुश्किल से निकले थे। गुरु रामदासजी समझाते हैं–

काइआ नगरु नगरु है नीको, विचि सउदा हरि रसु कीजै।।
(आदिग्रंथ, पृ० १३२३)

हमारा शरीर एक बहुत बड़ा सुन्दर नगर है। इसमें बैठकर हम हरि का सौदा खरीद सकते हैं। ऐसा और कोई भी चोला नहीं है, जिसमें बैठकर हम यह सौदा कर सकें। मनुष्य का शरीर ही नाम की दुकान है। इसमें आने का यही लाभ है कि हम नाम का सौदा खरीदें, मालिक की भक्ति करें; लेकिन हम दुनिया के जीव इस देह में बैठकर उस परमात्मा को भूल जाते हैं, विषय-विकार, शराब-कबाब से हमें फुरसत ही नहीं मिलती। हम समझते हैं, यह जग मिट्ठा, अगला किन डिट्ठा' और 'बाबर-ब-ऐश कोश के आलम दोबारा नेस्त।' हम सोचते हैं कि शायद परमात्मा ने वह इंसान का जामा हमें भोग-विलास या दुनिया के धंधे या कारोबार के लिए बख्शा है। हम इन्द्रियों के भोगों में इतने फँस जाते हैं कि और-तो-और, अपनी मौत को भी भूल जाते हैं। देख रहे हैं कि हमारे साथी किस तरह चले जा रहे हैं। उनको ले जाकर हम श्मशान-भूमि में छोड़ आते हैं; लेकिन हमारे दिल में यह विचार या ख्याल पैदा नहीं होता कि एक दिन हमें भी इसी घाट पर पहुँचना है। हम समझ बैठे हैं कि शायद मौत लोगों के लिए है, हमारे लिए तो आमोद-प्रमोद है, दुनिया के धंधे और

कारोबार हैं। स्वामीजी महाराज हमें इस गफलत की नींद से बेदार (सचेत) करते हैं। आप फरमाते हैं कि भाई! इस बात को अच्छी तरह सोचकर देख, इस दुनिया को आँखों के सामने रखकर देख, मौत के बाद तेरे सब यार-दोस्त, भाई-बहन इकट्ठे होकर तुझे उठाकर श्मशान-भूमि में ले जाएँगे और जिस देह का तू इतना मान करता है, जिसपर तुझे इतना नाज है, उसे आग के सुपुर्द कर देंगे या मिट्टी में दबा देंगे और जिस तरह अब लोगों की मिट्टी हमारे पैरों के नीचे रौंदी जा रही है, इसी तरह हमारी मिट्टी भी लोगों के पैरों के तले रौंदी जाएगी। अगर हमारी यह दुर्दशा होती है, तो फिर हम मान किस चीज का करते हैं? क्या जवानी का गरूर करते हैं? क्या किसी का बुढ़ापा नजर नहीं आया? धन-दौलत का मान करते हैं, तो क्या कंगाली को कभी सड़कों पर ठोकरें खाते नहीं देखा? सेहत या अच्छे स्वास्थ्य का अभिमान करते हैं, तो क्या अस्पतालों में बीमारों की चीख-पुकार नहीं सुनी? अतएव आप प्यार के साथ फरमाते हैं कि मन में अहंकार नहीं करना चाहिए। कबीर साहब कहते हैं–

लूट सके तो लूट ले, राम नाम नित लूट।
अंतकाल पछताओगे, जब तन जायेगा छूट॥

जब अंत में इस देह को छोड़ते हैं, तब पछताना पड़ता है कि हमने इस देह में बैठकर किस चीज को इकट्ठा किया, कौन-सी चीज है, जो हमारा साथ देगी! जिनको सारी उमर अपना-अपना कहते थे, उन्हें एक पल में छोड़कर अलग हो जाते हैं। कबीर साहब कहते हैं–

यह तन है कागज की पुड़िया, बूँद पड़त गल जाओगे।
कहत कबीर सुनो भाई साधो, इक नाम बिना पछताओगे॥

जिस प्रकार कागज की पुड़िया पर अगर पानी गिर जाता है, तो कागज गल जाता है, उसी प्रकार हमारी देह को भी गल जाना है, आग या मिट्टी में जाकर खत्म हो जाना है। आखिर मौत के वक्त हमें पछताना पड़ता है कि हमने अपने अमूल्य समय को व्यर्थ में बरबाद कर दिया। गुरु नानक साहब कहते हैं–

बिनु नावै को संगि न साथी। मुकते नामु धिआवणिआ॥
(आदिग्रंथ, पृ० १०९)

भाइयो! नाम के बगैर कोई भी आपकी सहायता न तो कर सकता है और न कर सकेगा। आप किस चीज का मान करते हैं, किस बात का अहंकार करते हैं? शरीर तो काल का पिंजरा है, किराये का मकान है। किसी को चालीस-पचास साल के लिए मिलता है, तो किसी को अस्सी-नब्बे साल के लिए। जब हमारा साँसों का भंडार खत्म हो जाता है, तो हम सबको इस देह को यहीं छोड़कर जाना पड़ता है। कबीर साहब कहते हैं–

लकड़ी कहे लुहार को, तू क्या जारे मोहि।
इक दिन ऐसा आयगा, मैं जारौंगी तोहि॥

लुहार लकड़ी को जला-जलाकर उसके कोयले बनाता है; लेकिन लकड़ी लुहार से कहती है कि कभी तूने उस वक्त के बारे में सोचा है, जब तुझे अपने अंदर मिलाकर मैं भी इसी तरह तेरे कोयले बना दूँगी। कबीर साहब आगे कहते हैं–

माटी कहे कुम्हार को, तू क्या रूँदे मोहि।
इक दिन ऐसा होयगा, मैं रूँदूँगी तोहि॥

कुम्हार मिट्टी को रौंद-रौंदकर उसके बरतन बनाता है; परन्तु मिट्टी कहती है कि कभी उस समय के बारे में सोचने की कोशिश करो, जब मैं तुझे अपने अंदर इसी तरह रौंद डालूँगी।

इसी प्रकार महात्मा हमें समझाते हैं कि जब आखिरी वक्त आता है, तब हमें धर्मराज के पास जाना पड़ता है और हमारी कामनाओं तथा कर्मों के अनुसार जहाँ वह उचित समझता है, वहाँ जाकर हमें जन्म लेना पड़ता है। एक देह की कैद से छुटकारा नहीं होता कि दूसरी देह का कलबूत (ढाँचा) पहले ही हमारे लिए तैयार खड़ा होता है। उसमें बाद में प्रवेश करते हैं, मौत आँखों के सामने पहले ही नाचना शुरू कर देती है। दस नंबरियों की तरह हम सबको हथकड़ियाँ लगी ही रहती हैं, हम चौरासी के जेलखाने में फँसे ही रहते हैं। इसीलिए स्वामीजी महाराज हमें अच्छी तरह समझाते हैं–

दीन गरीबी चित में धरना, काम क्रोध से बचना। ❖

साकार और निराकार

–श्रीरामकृष्ण परमहंस

एक व्यक्ति ने श्रीरामकृष्ण से पूछा– 'महाराज! साकार बड़ा है या निराकार?' श्रीरामकृष्ण ने कहा– 'निराकार दो प्रकार का है–पक्का और कच्चा। पक्का निराकार अवश्य ही एक उच्च भाव है। साकार के सहारे उस निराकार में पहुँचना पड़ता है। ब्राह्म समाजवालों का कच्चा निराकार है–जैसे आँख मूँदने पर अँधेरा ही दिखाई देता है।'

ईश्वर साकार भी है और निराकार भी। फिर वे साकार, निराकार के परे भी हैं। वे क्या हैं, यह वे ही जानते हैं।

साकार रूप क्या है, जानते हो? जैसे जलराशि के भीतर से बुलबुले उठते हैं, वैसे ही महाकाश चिदाकाश में से एक-एक रूप प्रकट होते दिखाई देते हैं। अवतार भी एक रूप है।

ईश्वर का साक्षात्कार न होने पर यह सब समझ में नहीं आता। साधकों के लिए वे नाना भाव से, नाना रूप धारण कर दर्शन देते हैं। एक रँगरेज के पास एक घमेला रंग का था। उसके पास कई लोग कपड़ा रँगवाने आते। वह उनसे पूछता– 'तुम किस रंग में कपड़ा रँगवाना चाहते हो?' कोई कहता–'मुझे लाल रंग में रँगवाना है।' वह रँगरेज तुरन्त उसके कपड़े को रंग के घमेले में डुबोकर निकालते हुए कहता–'यह लो तुम्हारा लाल रंग में रँगा कपड़ा।' कोई आदमी कहता–'मुझे पीले रंग में रँगवाना है।' वह रँगरेज झट उसके कपड़े को उसी घमेले में डुबोकर लौटाते हुए कहता–'यह लो तुम्हारा पीले रंग में रँगा कपड़ा।' इस प्रकार जिसे जिस रंग में कपड़ा रँगवाना होता–नीला, हरा, नारंगी। वह उसके कपड़े को उस एक ही घमेले में डुबोकर उस रंग में रँग दिया करता। एक व्यक्ति उसका यह अद्भुत कार्य देख रहा था। रँगरेज ने उससे पूछा– 'क्यों जी, तुम्हें किस रंग में रँगवाना है?' तब वह बोला– 'भैया! तुम जिस रंग में रँगे हो, मुझे वही रंग चाहिए।

एक संन्यासी जगन्नाथजी के दर्शन करने गया। जगन्नाथजी के दर्शन कर उसके मन में सन्देह उठा कि भगवान साकार है या निराकार। उसके हाथ में डण्डा था, उस डण्डे को घुमाकर वह देखने लगा कि वह जगन्नाथजी की देह को लगता है या नहीं। पहली बार एक ओर से दूसरी ओर तक डण्डा ले जाते समय उसने देखा कि जगन्नाथजी की देह में डण्डे का स्पर्श नहीं हुआ, उसे वहाँ ठाकुरजी की मूर्ति नहीं दिखाई दी। पर फिर दूसरी बार जब वह डण्डे को उस ओर से इस ओर ले आने लगा, तो उस समय वह ठाकुरजी की मूर्ति को छू गया। तब संन्यासी समझ गया, ईश्वर साकार भी है और निराकार भी।

घण्टी बजाते समय हर एक टोले से साथ 'टन्-टन्' की आवाज अलग-अलग और स्पष्ट सुनाई पड़ती है। यह मानो साकार है। पर बजाना बन्द करते ही आखिरी टोले की आवाज थोड़ी देर तक गूँजती हुई शान्त हो जाती है, यह मानो निराकार है। घण्टी की ध्वनि की तरह ईश्वर की भी साकार और निराकार दोनों अवस्थाएँ हैं।

साकार रूप में ईश्वर के दर्शन किए जा सकते हैं, उनका स्पर्श किया जा सकता है; जैसे मित्र के साथ बातचीत की जाती है, वैसे ही उनके साथ प्रत्यक्ष सम्भाषण किया जा सकता है।

ईश्वर को निराकार मानते हुए उसी स्वरूप में उनका चिन्तन-मनन करना ठीक है; परन्तु ऐसी बुद्धि मत रखो कि केवल यही मत सही है और बाकी सब गलत। निराकार भी सत्य है और साकार भी सत्य है। तुम्हारा जिस

पर विश्वास है, उसी को पकड़े रहो। उनका साक्षात्कार हो जाने के बाद उनका यथार्थ स्वरूप समझ में आ जाएगा।

ईश्वर नित्य भी है और लीलामय विश्वपिता भी। अखण्ड सच्चिदानन्द ब्रह्म की धारणा नहीं की जा सकती। वह मानो अनन्त, असीम समुद्र की तरह है, उसमें पड़कर मनुष्य मानो किनारा न पाकर डूबने लगता है; परन्तु साकार लीलामय ईश्वर को पाकर उसे मानो किनारा मिल जाता है।

भक्तिपथ में साधक को एक अवस्था में साकार अच्छा लगता है, फिर एक अवस्था में निराकार अच्छा लगता है।

भक्त के सम्मुख ईश्वर नाना रूपों में प्रकट होता है; परन्तु ज्ञानी को समाधि में निर्गुण, निराकार, निरुपाधिक ब्रह्म का ज्ञान होता है। ज्ञान और भक्ति में यही अन्तर है।

जिस प्रकार पानी जमकर बर्फ बन जाता है, उसी प्रकार निराकार, अखण्ड, सच्चिदानन्द ब्रह्म ही साकार रूप धारण करता है। जैसे बर्फ पानी से ही पैदा होती है, पानी में ही रहती है और पानी में ही मिल जाती है, वैसे ही ईश्वर का साकार रूप भी निराकार ब्रह्म से ही उत्पन्न होता है, उसी में अवस्थित रहता है तथा उसी में विलीन हो जाता है।

अग्नि का कोई आकार नहीं होता, पर उसके जलते समय भिन्न-भिन्न आकार दिखाई देते हैं। इसी तरह निराकार ब्रह्म के भी नाना आकार दिखाई देते हैं। ❖

काम करनेवाले के सामने अवसर सदा उपस्थित रहते हैं

–स्वामी रामतीर्थ

काम करो, यह कहना तो सहज है; लेकिन काम करना बड़ा कठिन है। क्या आपको यह अनुभव है कि आपमें काम करने की इच्छा होते हुए भी आप काम क्यों नहीं कर पाते? आपने यह भी ज्ञात होगा कि किसी समय काम की इच्छा न होते हुए भी आपसे उच्चतर काम हो गया। यह भी एक कार्य की उच्चतर सत्ता है, जो आपकी कार्यकुशलता पर शासन करती है। अतः यह पता चलता है कि कोई ऐसी वस्तु है, जो समस्त कार्यकारिणी शक्तियों को अत्यंत उपयोगी बनाती है। यदि उच्च मनोवृत्ति से लाभ उठाएँ, तो सदा अपने को उत्कृष्ट-दशा में रख सकते हैं। अखिल विश्व के दाता परमात्मा के साथ ऐक्य स्थापित करने और स्वार्थपूर्ण आकांक्षाओं से ऊपर उठने के अतिरिक्त उच्च मनोवृत्ति का उच्चतर रहस्य और कोई नहीं है। अपने आंतरिक प्रकाश के रहस्य से लाभ उठाकर आप कार्य को विचित्र बना सकते हैं।

काम करनेवाले के सामने अवसर सदा उपस्थित रहते हैं और काम न करनेवाले को लाखों अवसरों में एक भी अवसर से लाभ नहीं हो सकता। आपमें कार्य करते रहने के बल की दृढ़ संकल्प शक्ति विद्यमान है, तो आप किसी भी समय उच्चतम सफलता तक पहुँच सकते हैं।

संसार में ऐसा कोई भी व्यक्ति नहीं, जिनके पास जीवन में एक बार सफलता पाने का अवसर न आता हो; परन्तु जो आदमी कार्य करने को तत्पर नहीं होता, तो सफलता उलटे पाँव लौट पड़ती है।

सफलता कोई पका पकाया भोजन नहीं, जो ग्रास मुँह में रखा और खाने लगे। जी तोड़ कार्य करना होता है। काम करने की शक्ति और बुद्धि ईश्वर ने दी है, तो आप सारा दिन आलस्य में पड़े हुए क्यों काटते हैं? हाथ-पैर चलाइये, काम कीजिए। ज्ञान की बहती हुई सम्पत्ति में वृद्धि करके अपने आपको सफल बनाइये। **'केवल कर्महीन ही ऐसे हैं, जो भाग्य को कोसते हैं।'** □

सम्पादकीय

विचार करने योग्य बातें

वर्तमान समय में हम जिस घर में रहते हैं, जिसे हम अपना घर कहते हैं, क्या वास्तव में वह घर हमारा है? हमसे पहले हमारे स्वर्गीय माता-पिता इसे अपना घर कहते रहे और आज भी शौचालय को साफ करनेवाला मेहतर अपने साथी से कहता है–'इस मुहल्ले के सभी घर हमारे हैं।' इस घर में रहनेवाले कुत्ते, बिल्ली आदि भी इसे अपना घर मानते हैं, तो यह घर किसका है? किसी का नहीं। धर्मशाला के यात्री की भाँति अपने जीवन की निश्चित अवधि तक रहकर सब चले जाते हैं। अतएव निश्चय करो, केवल यह घर ही क्या, इस संसार में कुछ भी 'मेरा' नहीं, यह शरीर भी 'मेरा' नहीं है।

घनघोर वर्षाकाल में जब खेती की सूखी धरती अपनी प्यास बुझाकर पानी से लबालब भर जाती है, तो किसानों के मन-मयूर नाच उठते हैं। जोताई-बोआई की भावी योजनाएँ उसी समय बन जाती हैं; किन्तु यदि वह किसान समय पर खेतों की जोताई न करे, समय पर बीज न बोएँ, तो क्या उन्हें उत्तम फसल की प्राप्ति हो सकती है? कदापि नहीं। ठीक इसी प्रकार विश्वास रखें–विख्यात संत-महापुरुषों की पीयूषमयी पावन वाणी के सत्संग से सराबोर मन, अपने भावी जीवन को साधन-भजनमय बनाने की योजनाएँ बनाता है। यदि प्रमादवश इस सत्संग-सुधा को माया के जाल में जकड़कर भुला दें, तो क्या इस मानव-जीवन की उत्तम गति मिल सकती है? अतएव दृढ़ इच्छाशक्ति से इस देव-दुर्लभ जीवन का सदुपयोग करते हुए साधन-पथ पर अग्रसर रहने में ही सफलता के दर्शन हो सकते हैं।

बिल्ली अचानक झपटकर जब किसी चूहे को दबोचकर उदरस्थ कर लेती है, तब उसके साथी चूहों का कुछ वश चलता है? क्या उसके साथी उस समय कुछ सहयोग दे सकते हैं? कुछ भी नहीं। ठीक इसी प्रकार निश्चय करो, वह मृत्यु रूपी बिल्ली किसी भी क्षण झपट्टा मार सकती है, उस समय हमारे पुत्र-कलत्र, सगे-संबंधी कुछ भी काम नहीं आ सकेंगे। सब खड़े ताकते रह जाएँगे और प्राण पखेरू हवा के झोंके जैसे अनन्त की ओर उड़ जाएँगे।

प्रतिपल अपने साथ रहनेवाला यह शरीर भी जब अपना नहीं है, तो इससे संबंध रखनेवाले पुत्र, स्त्री और नाते-रिश्तेदार जिन्हें आप सदैव 'अपना-अपना' आए हैं, वे क्या तुम्हारे हैं? यदि वे तुम्हारे अपने हैं, तो कभी उदरशूल होने पर अथवा किसी अन्य वेदना के क्षणों में तुम्हारे दुःख-दर्द को बाँट सकते हैं? जब ऐसा नहीं है, तो आप उन्हें अपना-अपना कहकर मोह के मोहक जाल में क्यों जकड़े रहते हैं।

दरद बँटाय सकै नहिं, मुए न चालै साथ।
इतने पै अपनो कहैं, सब नाते बरबाद॥

सुन्दर शरीर भी हो, उस पर सुन्दर वस्त्र-आभूषण भी पहना हुआ हो; किन्तु यदि शरीर में प्राण नहीं रहे, तो वे सब वस्त्र-आभूषणादि बेकार हैं। इसी प्रकार विश्वास रखो, जप-तप, पूजा-पाठ, कीर्त्तन, प्रार्थना आदि सब कुछ करते हैं; परन्तु यदि भगवान के प्रति श्रद्धा नहीं, तो भगवत्-प्राप्ति कदापि नहीं हो सकती।

खेत में घास बोई नहीं जाती, अपने आप उत्पन्न हो जाती है; परन्तु गेहूँ, चना, धान आदि अन्न पैदा करने के लिए, तो पुरुषार्थ करना ही पड़ता है। जोतना, कोड़ना और बोना पड़ता है। इसी प्रकार याद रखें–काम, क्रोध, लोभ, मोह, मत्सर, दम्भ, झूठ आदि तो अपने आप ही आ जाएँगे; परन्तु ज्ञान, वैराग्य, सत्य,

दया आदि सद्गुणों के लिए, तो संत-सद्गुरु के सान्निध्य में रहकर सत्संग-भजन आदि परम पुरुषार्थ करना ही होगा।

बेचारा कोल्हू का बैल सुबह से चलना प्रारम्भ करता है, दिनभर चलता है, फिर रात्रि में विश्राम करके पुनः चलना प्रारम्भ कर देता है और यों ही चलते-चलते उसका समस्त जीवन व्यतीत हो जाता है; परन्तु जब कभी वह देखता है, तो अपने को वहीं-का-वहीं पाता है, जहाँ से वह चला था। इसी प्रकार याद रखें, विषयासक्त प्राणी आनन्द की खोज में पंच विषयों (रूप, रस, गंध, स्पर्श और शब्द) के दायरे में रहता है; परन्तु आनन्द की प्राप्ति कर नहीं पाता। जब देखता है, तब ही अपने को दुःख व चिन्ताओं के घेरे में ही पाता है। जानते हैं, उसे आनन्द की प्राप्ति कब होगी? जब वह शब्दादि पंच-विषयों के चक्कर में चलना छोड़कर अन्दर चलना प्रारम्भ कर दे।

घड़ी की चाबी ऐंठने में तो सिर्फ एक-दो मिनट ही लगते हैं, पर क्या उस घड़ी को एक-दो मिनट ही 'टिक-टिक' करना पड़ता है? कदापि नहीं। उस एक-दो मिनट की चाबी के फलस्वरूप बेचारी घड़ी को २४ घंटे से अधिक समय तक 'टिक-टिक' करना पड़ता है। इसी प्रकार याद रखें, यदि इस मनुष्य-योनि के कुछ काल में दूसरों को दुःख दिया, तो उसके फलस्वरूप उतने ही काल तक ही नहीं, बल्कि ८४ लाख योनियों में वही दुःख भोगना पड़ेगा।

यदि यह आशा लगाए बैठे हैं कि 'यह कार्य करके फिर निश्चिंत होकर भजन-सत्संग करेंगे', तो यह सरासर भूल है। जैसे तराजू में दस सेर मेंढ़क तौलना कठिन ही नहीं असम्भव है; क्योंकि जबतक पाँच मेढ़क पलड़े में रखेंगे, तबतक उनमें से दस फुदक जाएँगे। इसी प्रकार माया के कार्य चाहें कि पूरे हो जाएँ, सो पूरे होना कठिन ही नहीं असम्भव है। लड़की का विवाह किया, तो औरत बीमार पड़ गई, औरत ठीक हुई, तो गाय खो गई, गाय मिली, तो दीवार गिर गई आदि एक-न-एक झंझट आगे-आगे लगा ही रहेगा। अतः भजन-सत्संग करना अभी इसी समय से प्रारम्भ कर दें।

अपने नगर में, देश में अथवा संसार के अनेक देशों में, नित्य सैकड़ों-सहस्रों व्यक्तियों की मृत्यु होती है। प्रायः नित्य ही हम दैनिक-पत्रों में मृत्यु और विनाश की घटनाएँ पढ़ते हैं। क्या हम कभी उन घटनाओं से दुःखी होते हैं? लूट-मार की घटनाओं से अथवा आततायियों द्वारा किये गये अग्निकांडों से संसार में अपार सम्पत्ति नष्ट होती है। क्या उन घटनाओं से हमारा मन कुछ शोकाच्छादित होता है? उत्तर 'नहीं' में मिलता है। तब यह दुःख, यह शोक कहाँ से आता है? निश्चय ही यह दुःख और शोक 'मैं' और 'मेरे' की अभेद्य ग्रन्थि का ही परिणाम है। दुःख का उद्गम बाहर नहीं मन के भीतर है। हमारा मनस्थ मोह ही हमें दुःख और शोक की अभेद्य शिकंजे में जकड़े रहता है।

आपका मन जब ईमानदारी को छोड़कर बेईमानी की ओर चलने लगे, तो समझें कि अब आपका सर्वनाश होनेवाला है। बेईमानी से पैसा मिल सकता है, पर सावधान रहें, उस पैसे को छूएँ नहीं। वह अग्नि के समान चमकीला तो है, पर छूने पर जलाये बिना नहीं रहता।

ईमानदारी से चाहे थोड़ी ही सम्पत्ति कमाई जाए, पर वह पीढ़ियों तक कायम रहेगी और बढ़ती रहेगी, जबकि बेईमानी के विशाल वृक्ष एक ही झोंके में उखड़कर गिर जाते हैं। एक दिन वह अवश्य ही उन्नति करेगा, जो दूसरों के लाभ को अपने ही लाभ की तरह देखेगा। यह मत समझें कि ईमानदार को भोंदू और अकर्मण्य समझा जाएगा। मूर्ख ही ऐसा ख्याल कर सकते हैं। विवेकवानों की दृष्टि में न्यायशील और ईमानदार आदमी ही बड़ा समझा जाएगा, फिर चाहे वह गरीब ही क्यों न हों। ❖

स्वास्थ्य-समाचार

पायरिया : दाँतों का एक बहुत ही प्रचलित रोग है पायरिया। यह रोग आज की सभ्यता की देन है। डब्बे में बंद खाद्य पदार्थ, शक्कर, मैदा, पालिशवाले चावलों की ओर ज्यों-ज्यों हमारा आकर्षण बढ़ रहा है, त्यों-त्यों इस रोग से आक्रांत लोगों की भी संख्या बढ़ती जा रही है।

निवारण : भोजन में क्षार की मात्रा भी होनी चाहिए, जो कि चोकरदार आटा, दूध, ताजे पके फल व हरी कच्ची तरकारियों में अधिक मात्रा में होता है। यदि इसका ध्यान रखा जाए, तो यह रोग कभी नहीं होगा।

कब्जियत : प्रतिदिन सुबह-शाम पका पपीता खाने से वर्षों पुरानी कब्जियत मिटती है।

हृदय रोग : पपीते के सूखे पत्तों की चाय अथवा उसका काढ़ा बनाकर प्रतिदिन पीने से लाभ होता है। यह काढ़ा ज्वर में भी लाभदायक है।

दाद-खाज-खुजली : पपीते के दूध अथवा उसके पाउडर में सुहागा मिलाकर दाद-खाज-खुजली पर लगाने से लाभ होता है।

सिर-दर्द (आधे सिर में) : दही, चावल व मिश्री मिलाकर सूर्योदय से पहले खाने से सूर्योदय के साथ बढ़ने-घटनेवाला सिर- दर्द ठीक हो जाता है। यह प्रयोग कम-से-कम छह दिन करें।

बवासीर-अर्श : वायु-कफ के कारण हुए बवासीर में नियमित रूप से पपीते का सेवन करने से लाभ होता है।

धूम्रपान का दुष्परिणाम फेफड़े का कैंसर : फेफड़े के कैंसर (Lung Cancer) का एक बड़ा कारण धूम्रपान है। सच तो यह है कि धूम्रपान फेफड़े के अलावा मुख का कैंसर, हृदय रोग, अल्सर और दमा आदि होने का भी कारण है। इसलिए धूम्रपान की लत से छुटकारा पाने से कई रोगों से बचा जा सकता है।

गुटखा खाना, मौत बुलाना : रंग-बिरंगी तम्बाकू की पुड़िया (गुटखा) आज शहर ही नहीं, गाँव के छोटी-सी दुकान की शोभा बढ़ाती नजर आती है। बच्चे, जवान, बूढ़े सभी बड़े चाव से इसे फाड़ते और खाते हैं। दूसरी ओर इसके भयानक परिणाम सामने आ रहे हैं। गुटखा -सेवन करने से आमतौर पर जो बीमारियाँ हो रही हैं, उनमें प्रमुख हैं–खाँसी, गले हुए गाल, मुँह सिकुड़ना, दाँत की बीमारी, गुर्दा खराब होना और कैंसर।

तम्बाकू : देश में प्रतिवर्ष लाखों लोग विभिन्न तम्बाकू उत्पादकों के सेवन के कारण अनेक गम्भीर रोगों की गिरफ्त में आकर काल के गाल में समा रहे हैं। इसके बावजूद इन उत्पादों की लत किशोरों से लेकर व्यस्कों के दिमागों पर हावी है। तम्बाकू में निकोटिन, नाइट्रोसामाइन्स, बेन्जोपाइरीन्स, आर्सेनिक और क्रोमियम आदि कैंसर पैदा करनेवाले प्रमुख तत्त्व पाये जाते हैं। इसमे मौजूद निकोटिन, कैडमियम और कार्बन मोनोऑक्साइड तत्त्व सेहत के लिए अत्यंत हानिकारक है। इसलिए तम्बाकू, पान-मसाला, गुटका आदि का सेवन कदापि नहीं करें।

(साभार–दैनिक जागरण, ३१.०५.२०११ ई०)

एक इंजेक्शन से दूर होगा अन्धापन :

वैज्ञानिकों ने एक ऐसा इंजेक्शन ईजाद करने का दावा किया है, जो अन्धेपन को रोकने में मददगार साबित हो सकता है, ब्रिटेन के यार्कशायर नेत्र अस्पताल के नेतृत्व में एक अंतरराष्ट्रीय दल ने ऐसा स्टेरॉयड तैयार किया है, जो अंधेपन और इससे संबंधित बीमारी को रोकने के लिए रेटिना के पास एक एंटी इनफ्लेमेट्री दवा का उत्सर्जन करता है। संडे एक्सप्रेस की रिपोर्ट के मुताबिक, इस इलाज की कीमत २,००० पाउंड है। इसके जरिये नसों में किसी प्रकार की रुकावट के कारण अचानक होनेवाली नजर की कमजोरी को रोका जाता है। साथ ही मधुमेह और बढ़ती उम्र से संबंधित समस्याओं के कारण होनेवाली अंधेपन को भी इससे रोका जा सकता है। अस्पताल के एक विशेषज्ञ रफीक रहमान ने कहा कि यह बहुत उत्तेजक है और नजर से संबंधित कई समस्याओं के निदान के लिए इसका इस्तेमाल किया जा सकता है।

(साभार–प्रभात खबर, १८.०४.२०११ ई०)

गेड़ाबाड़ी संतमत-सत्संग मंदिर समिति का गठन

दिनांक २.६.२०११ ई० को संतमत-सत्संग मंदिर गेड़ाबाड़ी के प्रांगण में एक आम बैठक हुई, जिसकी अध्यक्षता जिला सचिव श्रीनिरंजन कुमार ने की। इसमें जिला उपसचिव श्रीचुनचुन प्र० मंडल एवं जिला उपाध्यक्ष श्रीहीरालाल शर्मा की उपस्थिति में सर्वसम्मति से गेड़ाबाड़ी संतमत-सत्संग मन्दिर समिति का गठन किया किया गया, जिसके पदाधिकारी एवं सदस्य निम्न हैं–

संरक्षक : श्रीनागेश्वर प्रसाद सिंह, श्रीरामबालक दास। **अध्यक्ष :** श्रीराजेन्द्र प्रसाद रजक; **उपाध्यक्ष :** श्रीकाली प्रसाद गुप्ता। **सचिव :** श्रीदेवेन्द्र प्रसाद गुप्ता। **उपसचिव :** श्रीअरविन्द साह। **व्यवस्थापक :** श्रीनवल किशोर साह; **कोषाध्यक्ष :** श्री जयप्रकाश मेहता; **अंकेक्षक :** श्रीसीताराम शर्मा, विश्वनाथ गुप्ता; **कार्यकारिणी सदस्य :** सर्वश्री राजेन्द्र प्रसाद मेहता, सविता देवी, मेघनाथ रजक। **विशिष्ट सदस्य :** सर्वश्री कुमारेश्वर मेहता; कमलेश्वरी साह; कर्मलाल दास; पार्वती देवी; बहादुर शर्मा; डोमनी देवी; गणेश प्रसाद मेहता; चन्द्रदेव साह; अशोक साह; लक्ष्मीचन्द्र गुप्ता।

प्रेषक : राजेन्द्र प्रसाद रजक (अध्यक्ष)

कोढ़ा प्रखण्ड संतमत-सत्संग समिति का गठन

दिनांक ३.४.२०११ ई० को जिला सचिव श्रीनिरंजन कुमार की अध्यक्षता में एवं श्रीचुनचुन प्रसाद मंडल जिला उपसचिव की उपस्थिति में नक्कीपुर संतमत-सत्संग मन्दिर के प्रांगण में कोढ़ा प्रखंड संतमत-सत्संग समिति का गठन किया गया, जिसमें निम्नलिखित पदाधिकारीगण एवं कार्यकारिणी सदस्य तथा विशिष्ट सदस्य चयनित हुए–

संरक्षक : श्रीमुनिलाल दास, महेशपुर; श्रीदीपनारायण सिंह, मिर्जापुर, श्रीअयोध्या प्र० यादव, दिघरी; श्रीविश्वनाथ गुप्ता, गेड़ाबाड़ी; श्रीनारायण साह, कोलासी; श्रीरूद्रनारायण शर्मा, मुसापुर। **अध्यक्ष :** श्रीचन्द्रिका प्रसाद यादव, शिवाडीह। **उपाध्यक्ष :** श्रीहीरालाल शर्मा, मुसापुर; श्रीराजेन्द्र प्रसाद रजक, गेड़ाबाड़ी; श्रीदशरथ प्रसाद सिंह, हरिहरपुर। **सचिव :** श्रीनिरंजन कुमार, फुलबड़िया। **उपसचिव :** श्रीशिवगोविन्द प्रसाद, बावनगंज; श्रीकाली प्रसाद गुप्ता, मुसापुर; श्रीशंकर पोद्दार, कुम्हरा। **कोषाध्यक्ष :** श्रीलक्ष्मी प्रसाद गुप्ता, महेशपुर। **संयोजक :** श्री रामनारायण सिंह तूफान, झिकटिया; श्रीरामोतार सिंह, महेशपुर। **प्रचार मंत्री :** श्रीमती गायत्री देवी, श्रीमती सुदामा देवी, शिशिया; श्रीमती शांति देवी, हरिहरपुर। **प्रचारक :** श्रीजयकुमार सिंह, नक्कीपुर; श्रीजगदीश मिश्र, बाबा श्रीशिवराम दास, बहरखाल; श्रीरामदेव चौधरी, सुबोध कुमार सिंह, रामपुर; महेश्वरी सिंह, महिनाथपुर, विक्रम मंडल उर्फ मुन्ना, बावनगंज। **अंकेक्षक :** श्रीरामेश्वर मेहता, परमानंदपुर; **कार्यकारिणी सदस्य :** सर्वश्री अरविन्द प्रसाद यादव, रामपुर; चुवालाल यादव, बहरखाल; लक्ष्मी देवी, पवई; परमेश्वर साह, भटवारा; कृष्ण कुमार साह उर्फ झब्बो, खरिया; गंगानंद शर्मा, दीघरी; जगदीश रजक, राजवारा; शंकर ठाकुर, रौतारा; हरि प्रसाद मंडल, धर्मेली; दासो यादव, चन्दवा। **विशिष्ट सदस्य :** सर्वश्री नंदलाल यादव, बिषहरिया; सत्यनारायण रजक, राजवारा; कुलेश मंडल, रौतारा; कालेश्वर मंडल, परमानंदपुर; मानयन ठाकुर, शिशिया; सत्यनारायण सिंह, शिवनारायण प्रसाद, श्रवण पोद्दार, ब्रह्मदेव सिंह, फुलबड़िया; द्रौपदी देवी, पवई; चुनचुन पटेल, लक्ष्मीं मंडल, डेमाडीह; तारणी राय, हरदेव राय, भटवारा; कृष्णा सिंह, बीरन मंडल, बावनगंज; प्रसादी साह, देवेन्द्र गुप्ता, गेड़ाबाड़ी; जगदीश ठाकुर, केशरगंज; वासदेव दास, अशोक मेहता, बड़गाँव; मुनिलाल पंडित, छविलाल पंडित, पचमा; कालेश्वर प्रसाद सिन्हा, मकदमपुर; परमेश्वर पंडित, विंदेश्वरी शर्मा, बागेश्वर शर्मा, मुसापुर; नरेश यादव, योगेन्द्र यादव, मड़वा; पंचानन्द सिंह, झिकटिया; रामा देवी, गीता देवी, सत्यभामा देवी, महिनाथपुर; हरिलाल महतो, नक्कीपुर; जयप्रकाश शर्मा, रामचन्द्र मंडल, दीघरी; दशरथ मंडल, धर्मेली; बेनी मंडल, कटिहार टोला; रामचन्द्र साह, साहटोला चन्दवा; भुवनेश्वर शर्मा, हरिहरपुर; भरतलाल दास, जंगली दास, रामपुर; नारायण सिंह, रामचन्द्र सिंह, गोंदवारा; नवलकिशोर दास, गेड़ाबाड़ी; अरविन्द साह, कोढ़ा; चन्द्रदेव साह, जयप्रकाश मेहता, सोती; मेघनाथ रजक, गेड़ाबाड़ी; सीताराम शर्मा, कोढ़ा।

प्रेषक : निरंजन कुमार (सचिव) एवं चन्द्रिका प्रसाद यादव (अध्यक्ष)

पंजीयन सं० R.N. 30868/66
रजिस्ट्रार ऑफ न्यूज पेपर (भारत सरकार)

शान्ति-सन्देश

Postal R.N./BGP.-97/2009
अगस्त, २०११ ई०

अखिल भारतीय संतमत-सत्संग का १०१वाँ वार्षिक महाधिवेशन

स्थान : आर०पी०एम० कॉलेज, तुनियाही, मधेपुरा (बिहार)

दिनांक : ११, १२ एवं १३ फरवरी, २०१२ ई० (तदनुसार शनिवार, रविवार एवं सोमवार)

पक्ष ध्यान साधना शिविर का आयोजन

स्थान : संतमत-सत्संग मंदिर, झील चौक, मुरलीगंज (मधेपुरा) दिनांक : १ सितम्बर से १५ सितम्बर, २०११ ई० तक

साधक : केवल पुरुष **व्यवस्था शुल्क : नि:शुल्क**

आज चतुर्दिक संसार की धधकती हुई ज्वाला में तड़पते हुए मानव को शान्ति पाने के लिए इस साधना शिविर का आयोजन किया गया है। इस पुनीत अवसर पर महुवां बाजार से स्वामी अरविन्द बाबा तथा स्वामी शंकर बाबा (सहरसा) एवं अन्य साधु-महात्माओं का पदार्पण होगा। अत: साधकों से निवेदन है कि जो साधक पाँच बार एक-एक घंटा ध्यानाभ्यास के लिए बैठने में समर्थ हो, ऐसे साधक ही इस आयोजन में भाग लेने के लिए सम्पर्क सूत्र द्वारा सम्पर्क करके अपना स्थान निश्चित करवायें। स्वीकृति मिलने पर ही आने का कष्ट करेंगे। साधक अपने दैनिक व्यवहार के सभी सामानों के साथ ३१ अगस्त, २०११ के शाम तक पहुँच जाएँ। द्रष्टव्य : सभी ओर से आनेवाले झील चौक (बेंगा नदी के तट पर), मुरलीगंज पहुँचें। ट्रेन से आनेवाले मुरलीगंज स्टेशन से रिक्शा, टेम्पो आदि सवारी द्वारा झील चौक आश्रम पहुँचें।

निवेदक : प्रो० श्रीचिदानन्द यादव (अध्यक्ष), श्रीश्याम सुन्दर अग्रवाल (कोषाध्यक्ष) एवं मुरलीगंज, झील चौक, रहिका टोला के समस्त सत्संगीगण

सम्पर्क सूत्र : स्वामी शम्भू शरणानन्द बाबा, मो० : ९७०९३३७४९२, ९९३९९९३८७७, ९५०४५१०६८७; श्रीविवेकानन्द शर्मा, मो० : ७६३१७०४५४४, ८००२९२६६०२

राजगीर में सप्ताह ध्यान साधना शिविर का आयोजन

स्थान : संतमत-योग-निकेतन, राजगीर दिनांक : ९ नवम्बर से १५ नवम्बर, २०११ ई० तक

साधक संख्या : १०० **व्यवस्था शुल्क : स्वेच्छानुसार**

बिहार प्रांत के नालंदा जिलान्तर्गत संतमत-योग-निकेतन, राजगीर में सप्ताह-ध्यान-साधना-शिविर का आयोजन [स्वा]मी आत्मशोधक बाबा के सान्निध्य में होने जा रहा है। यहाँ के बारे में १९६६ ई० में परमाराध्य सद्गुरु महर्षि मेँहीँ पर[म]हंसजी महाराज ने सत्संग के अवसर पर कहा था–'जिस क्षेत्र में हमलोग सत्संग कर रहे हैं, यह बड़े महत्त्व का है। यहाँ भगवान बुद्ध बहुत सत्संग किया करते थे। इसके निकट ही वेणुवन में भगवान बुद्ध सत्संग कराया करते थे। [व]हाँ और भी पहाड़ पर उनका स्थान है। यह पुण्य भूमि है।' अत: भगवान बुद्ध एवं भगवान महावीर के इस पावन ध[रती] पर ध्यान-शिविर में भाग लेने हेतु अवश्य पधारें। साथ ही साधक अपने दैनिक व्यवहार की वस्तु, जैसे–आसनी, [क]मंडल, थाली, कम्बल आदि साथ में जरूर लावें। नोट–शिविर में भाग लेनेवाले साधक दिनांक ३१ अक्टूबर, २०११ [ई]० तक फोन : ०९४३०४८०१२४ (व्यवस्थापक) द्वारा सूचित करके स्थान सुरक्षित करवा लें।

[द्र]ष्टव्य : पूरब-उत्तर-नेपाल, अररिया, किशनगंज, बंगाल और असम आदि जगह से आनेवाले साधक पटना से पहले ५० [कि]लोमीटर बख्तियारपुर रेलवे स्टेशन उतरें। पश्चिम-दक्षिण-दिल्ली, पंजाब, गुजरात, महाराष्ट्र आदि जगहों से आनेवाले साधक [प]टना होते हुए बख्तियापुर स्टेशन उतरें। बख्तियारपुर स्टेशन से राजगीर के लिए हर वक्त रेल और बस सेवा उपलब्ध रहती हैं।

सहयोग राशि भेजने का पता : व्यवस्थापक
श्रीलक्ष्मी कुमार पंडित, संतमत-योग-निकेतन, बस स्टैण्ड
(कुशवाहा धर्मशाला के निकट) राजगीर, नालंदा (बिहार) ८०३११६

निवेदक :
स्वामी आत्मशोधक
मो० : ०९४३०६१३०१८

प्रों० डॉ० गुरु प्रसाद, एम०ए० (द्वय), एम०एड०, पी-एच०डी०, महर्षि मेँहीँ आश्रम, कुप्पाघाट, भागलपुर-३ (बिहार) द्वारा संपादित एवं प्रकाशित तथा शांति-संदेश प्रेस, महर्षि मेँहीँ आश्रम, कुप्पाघाट, भागलपुर-३ (बिहार) में मुद्रित।